नेहरू बाल पुस्तकालय

अंतरिक्ष का वरदान

लेखक
मोहन सुंदर राजन

चित्रकार
नीता गंगोपाध्याय

अनुवाद
सुरेश उनियाल
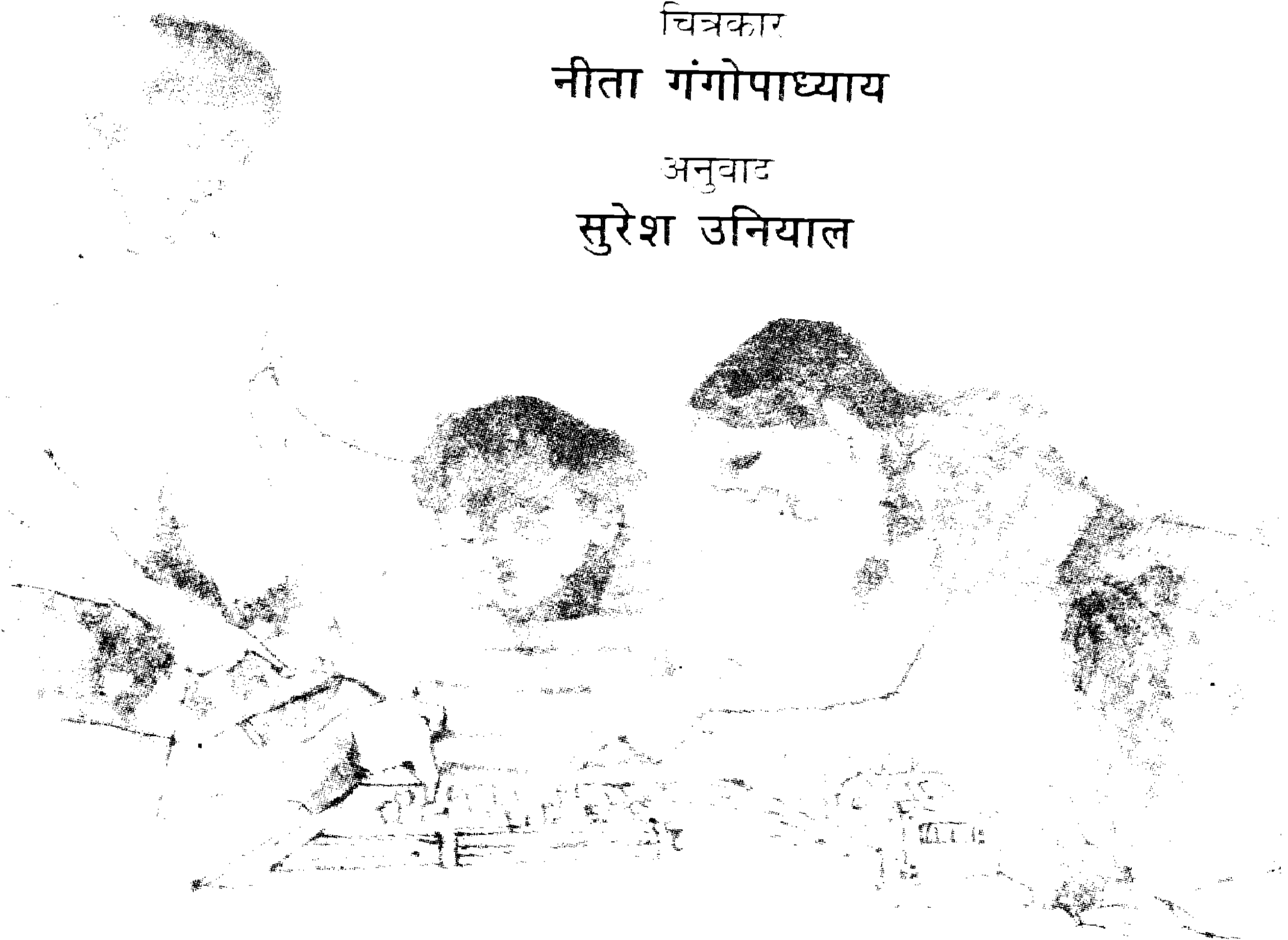
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

भारत के दक्षिणी छोर के इंदिरा पॉइंट के तट से लगे हुए सागर तल पर एक भारतीय खोजी पनडुब्बी खोजबीन कर रही थी। कप्तान उत्तम और उसके दल के अन्य लोग पानी के भीतर की उस विचित्र दुनिया को बड़े अचरज से देख रहे थे। इधर - उधर कई आकारों में मूंगों की चट्टानें चमक रही थीं और उनके भीतर कई किस्म की, रंग बिरंगी मछलियां और अलौकिक आकारों वाले जीवन मंडरा रहे थे।

तभी एक कठोर आदेश सुनाई दिया। जो जहां है वहीं रुक जाये। नौसैनिक अभ्यास चल रहा है।

इंजन बंद कर दिये गये। सब कुछ शांत होकर ठहर गया। अचानक उत्तम को मूंगे की चट्टानों के बीच में एक विचित्र-सी चीज पड़ी हुई दिखाई दी। यह चिकनी-सी चीज थी और आसपास की रंग-बिरंगी चीजों के बीच यह असामान्य-से एक ही रंग की थी। यह किसी भी जीवित जंतु से नहीं मिलती थी। जिज्ञासु उत्तम ने उसे उठा लाने का आदेश दे दिया।

यह एक बड़े आकार का उल्का पिंड था। उत्तम बहुत खुश हुआ। उसने ऐसी कोई चीज कभी पहले नहीं देखी थी—न समुद्र में और न जमीन पर। अंतरिक्ष यात्रा और पानी में रहने पर भी इस चीज का रंग और आकार नहीं बदला था।

ठहरे रहने की चेतावनी खत्म हो गयी थी। उत्तम ने ऊपर जाने का आदेश दिया। पहुंचते ही उसने अपने मित्र, कावालूर वेधशाला क्षेत्र में स्थित तारामंडल स्कूल के, प्रोफेसर मारुति को टेलीफोन किया और इस उल्का पिंड के बारे में उन्हें बताया।

प्रोफेसर मारुति बहुत उत्साह में आ गये थे। अब तक उन्होंने जितने भी उल्का पिंडों के बारे में सुना था, यह उन सबसे बड़ा था। इसका परीक्षण करने की अनुमति मिलते ही प्रोफेसर मारुति ने अंतरिक्ष के इस अवशेष पर परीक्षण करना शुरू कर दिया।
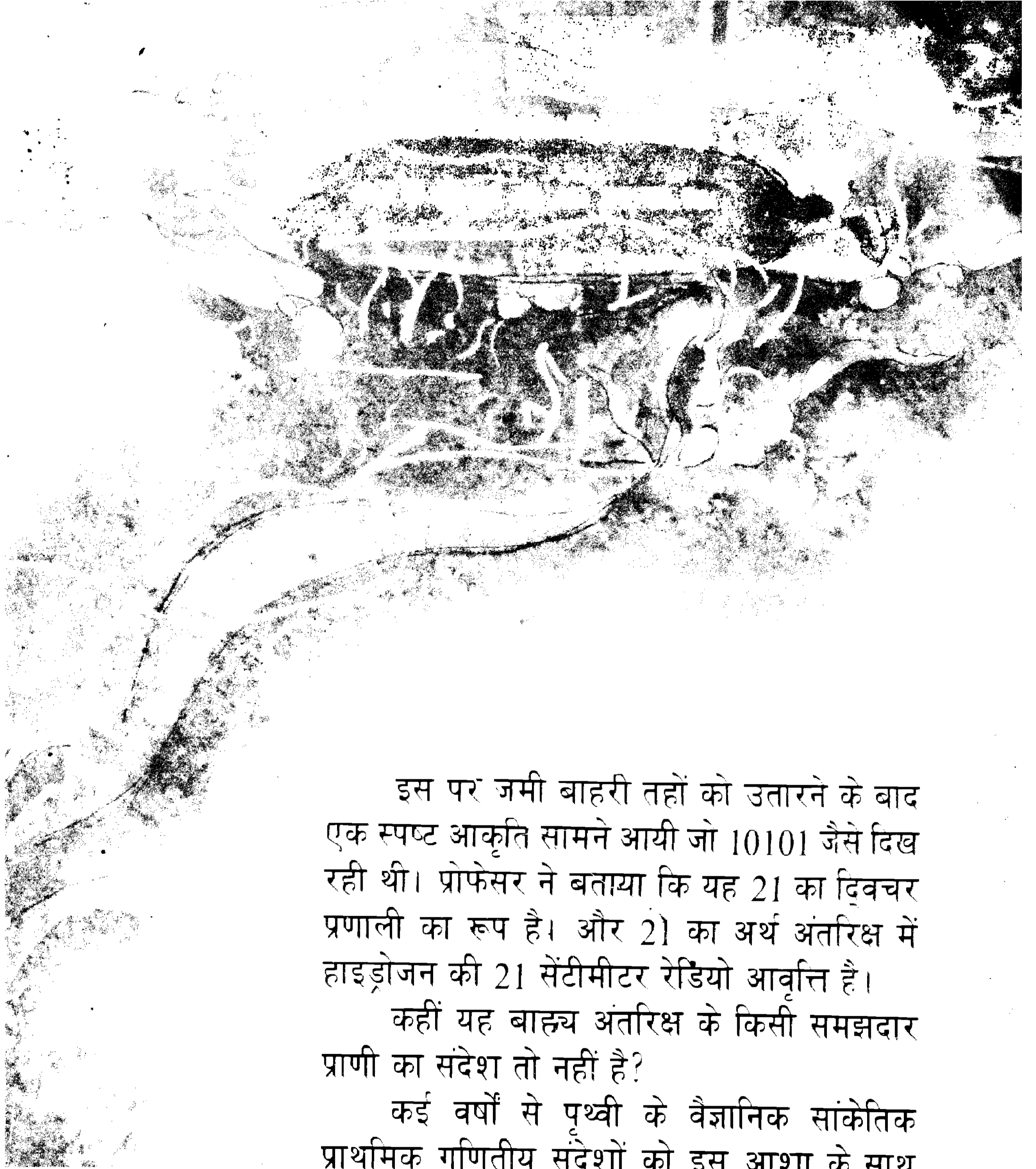
इस पर जमी बाहरी तहों को उतारने के बाद एक स्पष्ट आकृति सामने आयी जो 10101 जैसे दिख रही थी। प्रोफेसर ने बताया कि यह 21 का द्विचर प्रणाली का रूप है। और 21 का अर्थ अंतरिक्ष में हाइड्रोजन की 21 सेंटीमीटर रेडियो आवृत्ति है।

कहीं यह बाह्य अंतरिक्ष के किसी समझदार प्राणी का संदेश तो नहीं है?

कई वर्षों से पृथ्वी के वैज्ञानिक सांकेतिक प्राथमिक गणितीय संदेशों को इस आशा के साथ बाहर भेजते रहे हैं कि उन्हें कोई ग्रहण करेगा। पर अभी तक तो कोई जवाब नहीं मिला था। क्या यह कोई जवाब हो सकता है?

उल्कापिंड से प्राप्त संदेश
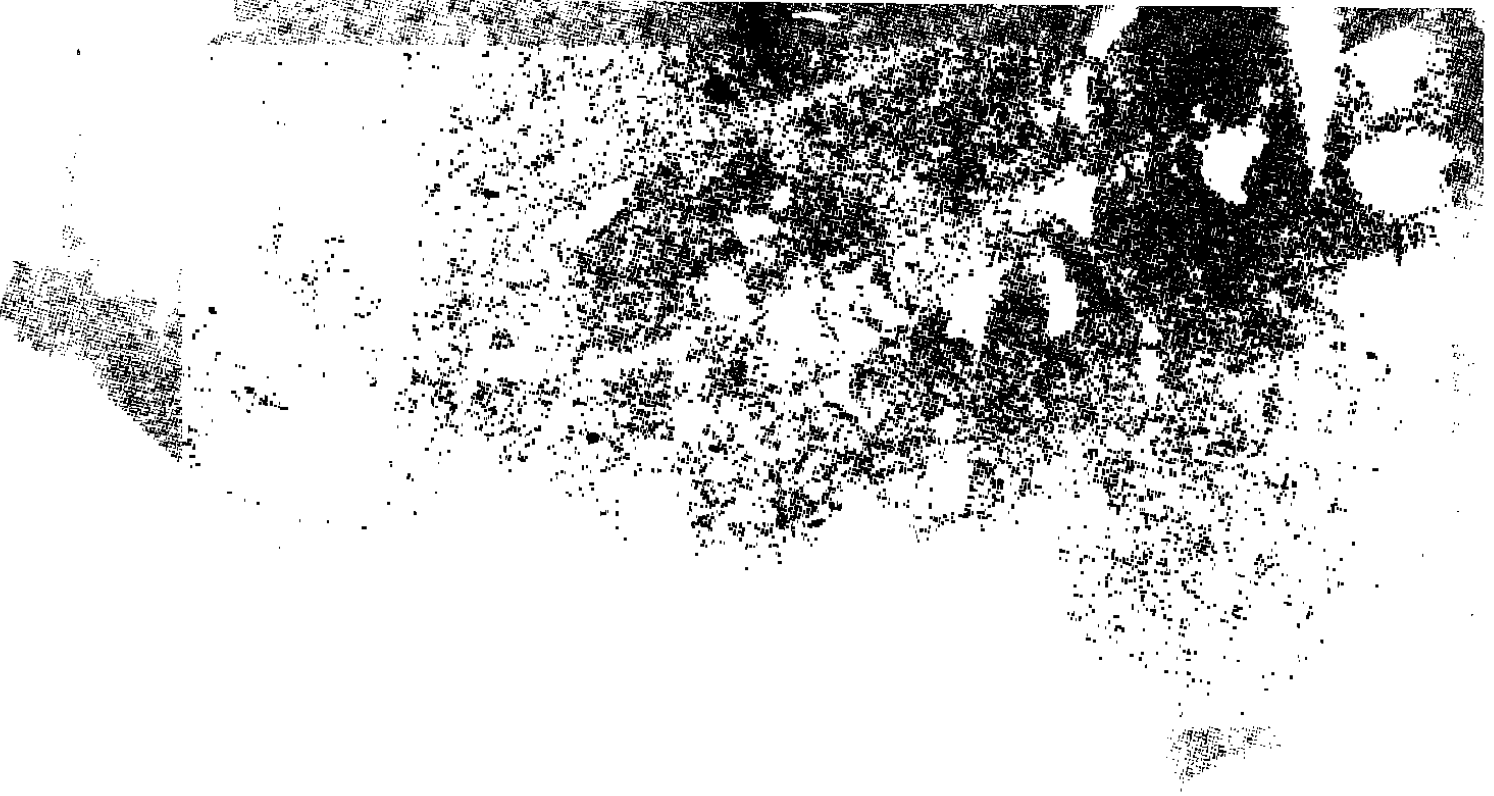
इस उल्कापिंड और इसके द्विचर संदेश की खबर पूरी दुनिया के रेडियो स्टेशनों से प्रसारित हो गयी। इसके साथ ही एक उग्र बहस भी शुरू हो गयी। अमरीकियों ने घोषणा की कि वे एक विशेष अंतरिक्ष यान बनायेंगे और इसे बाह्य अंतरिक्ष के उस क्षेत्र की खोज के लिए भेजेंगे जहां नये जीव का अभ्युदय हुआ है। दूसरी ओर रूसी लोग सावधानी से ही कोई कदम उठाना चाहते थे और तब तक प्रतीक्षा करना चाहते थे जब तक कि द्विचर प्रणाली से ही, उनसे पूरी तरह संपर्क नहीं कर लिया जाता।

बहुत से टेलीग्राम इस बात की वकालत कर रहे थे कि किसी भी तरह के संचार को रोक दिया जाये, कहीं ऐसा न हो कि वह दूसरी सभ्यता हमारी प्रौद्योगिकी को अभी आदिमकालीन ही समझ रही हो। कुछ और लोगों का तर्क था कि जो सभ्यता इतने समय तक जीवित रह सकती है, उसके इरादों के बुरे होने की संभावना कम ही लगती है। इसके साथ संपर्क खतरनाक सिद्ध नहीं होगा बल्कि लाभकारी ही हो सकता है।

प्रोफेसर मारुति बाह्य अंतरिक्ष में भेजने के लिए संदेश तैयार करने में लग गये। उन्होंने संदेश का संकेत करने की एक ऐसी प्रणाली तैयार की जो निस्संदेह समझदार प्राणियों द्वारा भेजी गयी ही मानी जायेगी। उन्होंने कहा कि विकिरण की 'ऑन-ऑफ' के एक-अनुक्रम द्वारा संदेश भेजा जा सकता
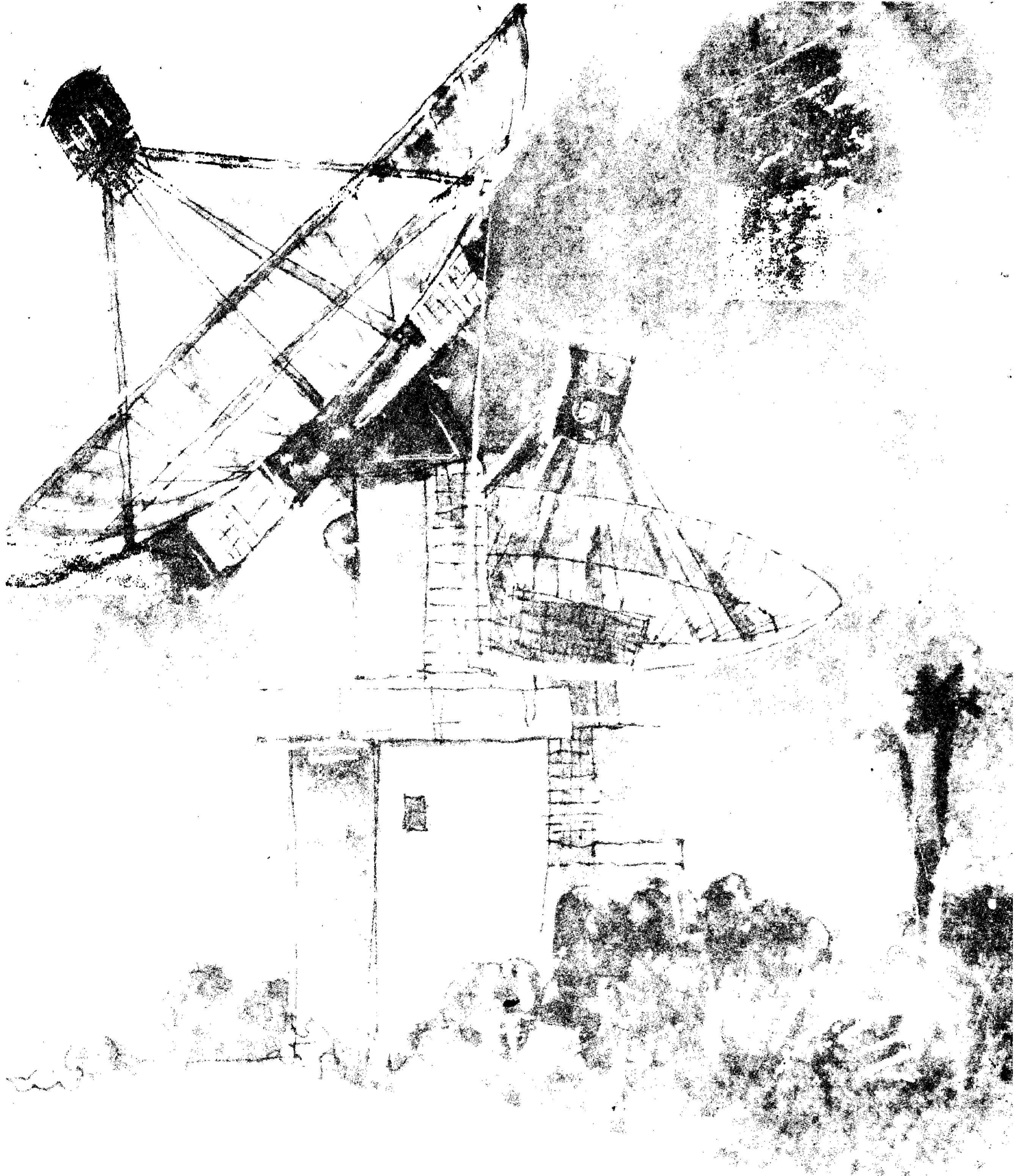
है। तरंग का अर्थ होगा एक और न होने का अर्थ होगा शून्य। इस प्रकार द्विचर श्रेणी की संख्याओं को प्रेषित किया जा सकता है। फिर, ये संख्याएं पहली बारह रूढ़ संख्याएं भी हो सकती हैं–1, 2, 3, 5, 7, 11, 13, 17, 19, 23, 29, 31. यह सामान्य गणितीय ज्ञान की ओर इंगित करेगा जो सिर्फ

समझदार प्राणियों की ओर से ही आ सकता है। एक स्पष्ट विवरण देने के लिए इस प्रकार के संदेश को क्रमबद्ध करने की प्रणाली भी तैयार की जा सकती है। 19 वर्गों के 29 समूहों के विन्यास से—मसलन ईकाईयों को काला और शून्यों को

सफेद करके—एक दिलचस्प चित्र बनाया जा सकता है जो मानव अस्तित्व के भौतिक स्वरूप, सौर प्रणाली की कार्यविधि तथा अन्य महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रकट कर सकता है।

तभी आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् की ओर से एक संदेश मिला। जीव रसायन विभाग के अध्यक्ष डाक्टर धनवंतरी कह रहे थे:

"मेरे ख्याल से आप बाह्य अंतरिक्ष में संदेश भेजने की तैयारी कर रहे हैं। मेरा एक सुझाव है।"

डाक्टर धनवंतरी ने समझाया कि वे मानव-मस्तिष्क की संरचना और कार्यविधि के बारे में नयी जानकारी पाना चाहते हैं। काश! यह संभव होता कि इस पर संकेतिक प्रश्न का उत्तर अंतरिक्ष की गहराईयों में बैठे उन समझदार प्राणियों से मिल पाता जो हमारे शुभचिंतक हैं।

प्रोफेसर मारुति सहमत हो गये। पर उनका सवाल था, "किंतु ऐसा जटिल संदेश कैसे भेजा जा सकता है?"

डाक्टर धनवंतरी ने वादा किया कि वे एक ऐसा प्रारूप तैयार करेंगे जो सरल होगा और साथ ही इतना व्यापक कि इस संदेश का अर्थ निकालने वाला मानव-मस्तिष्क के विकास की सही दशा और समस्याओं को जान सकेगा।

प्रोफेसर मारुति और उनके सहकर्मी संदेश को लेकर पूना स्थित भारत के उपग्रह संचार भू-केंद्र, आरवी पहुंचे। वहां बहुत से तश्तरी के आकार के संचार उपकरण लगे थे। वहां लगे आधुनिक उपकरण और

कंप्यूटर वैज्ञानिकों को मिनट भर में वे सब जानकारियां दे सकते थे जो पुराने जमाने में लगातार आकाश पर नजर रखकर दो सौ वर्षों में मिल पाती थीं।

उस महत्वपूर्ण प्रेषण के लिए उलटी गिनती शुरू हुई। इंजीनियरों ने सावधानी से हर चीज को जांचा-परखा। ऊपर आकाश में किसी भी तरह की उड़ान के लिए मनाही कर दी गयी।

जेनेवा स्थित अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार केंद्र से तार भेजकर अनुरोध किया गया कि सम्भावित सभ्यता के साथ संचार के लिए आरक्षित आकृति का प्रयोग करने की अनुमति किसी भी उपग्रह को न दी जाये।

इस प्रेषण में लगभग तीन घंटे लगे। पृष्ठभूमि विकिरणों से बचने के लिए थोड़े से समायोजन के साथ हाइड्रोजन रेखा आवृत्तियों का प्रयोग किया गया। संदेश तीन बार भेजा गया। कंप्यूटरों के अध्ययन से पता चला कि यह संदेश सैंकड़ों प्रकाश वर्ष की दूरी तक जा सकता था।

तत्काल किसी प्रकार के उत्तर की अपेक्षा तो किसी को नहीं थी। इंजीनियरों को आशा थी कि यदि कोई संदेश आया तो बारह वर्ष बाद ही आ पायेगा। वह भी कहीं बर्नार्ड के सितारे के निकट से, जो लगभग छह प्रकाश वर्ष की दूरी पर है। बर्नार्ड का सितारा पृथ्वी का तीसरा निकटतम सितारा है। इसकी मात्रा, सूर्य की मात्रा (परिमाण) का दसवां भाग है। इसके चारों ओर जल-सा दिखाई देता है, जो इसकी परिक्रमा करने वाले ग्रहों के कारण भी हो सकता है।
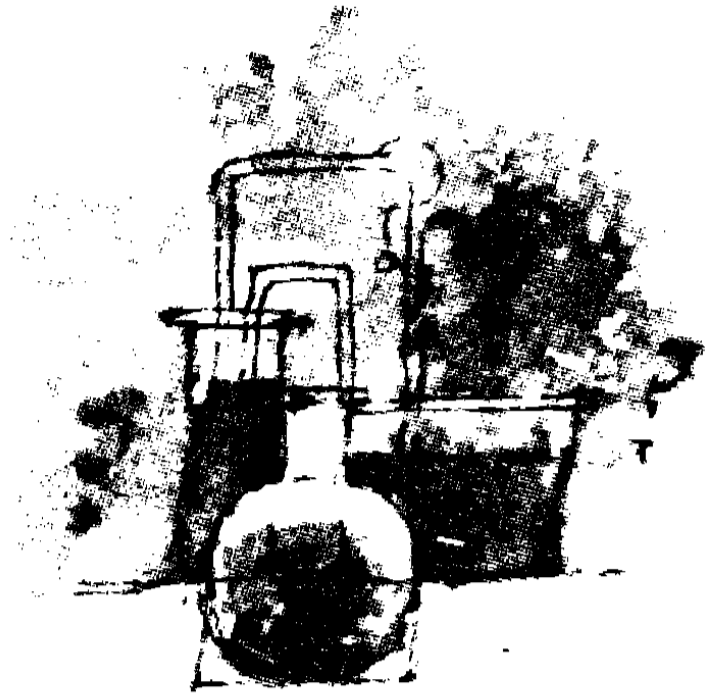
रासायनिक गुत्थी

बारह वर्ष बीत गये। पृथ्वी के लोग बाह्य अंतरिक्ष में भेजे अपने संदेश के बारे में लगभग भूल भी चुके थे। केवल आरवी में वैज्ञानिकों का एक छोटा-सा दल प्रतिदिन के आंकड़ों की सारिणी को देखता और उसका विश्लेषण करता। जैसे-जैसे समय की सीमा आ रही थी, उनकी उत्सुकता बढ़ती जा रही थी।

बारहवां वर्ष बीतता रहा, पर प्रतीक्षातुर तश्तरीनुमा उपकरणों से कोई भी संकेत नहीं टकराया। अब उत्साह तो ठंडा पड़ गया था पर निगरानी जारी थी।

तेरहवां वर्ष निकट आ रहा था। अब तक कोई खबर नहीं थी। तब वर्ष के अंतिम दिन समाचार पत्रों में अहमदाबाद से 100 किलोमीटर दूर दजला में उल्कापात की खबरें छपीं।

कुछ लोगों का ख्याल था कि यह उल्कापात का बारह वर्षीय चक्र था। कुछ लोग यह भी सोच रहे थे कि इसमें आरवी से भेजे गये संदेश का उत्तर हो सकता है। क्या वह सुदूरवर्ती सभ्यता लघु तरंग संचार की अपेक्षा उल्कापिंडों को बेहतर माध्यम समझती है?

उत्तम का विचार था कि ये उल्कापिंड पृथ्वी के लोगों से संवाद स्थापित करने के लिए एक निमंत्रण था। हो सकता है, बाह्य अंतरिक्ष के

जीवों ने सोचा हो कि एक बड़ी उल्का के बजाय–जैसी सौभाग्य से उसे मिल गयी थी–छोटी-छोटी उल्काओं के जरिये संदेश भिजवाना अधिक सुरक्षित है। उसने प्रोफेसर मारुति को फोन किया और कहा कि उल्कापिंडों के विश्लेषण के परिणाम निकलते ही उसे बता दें।
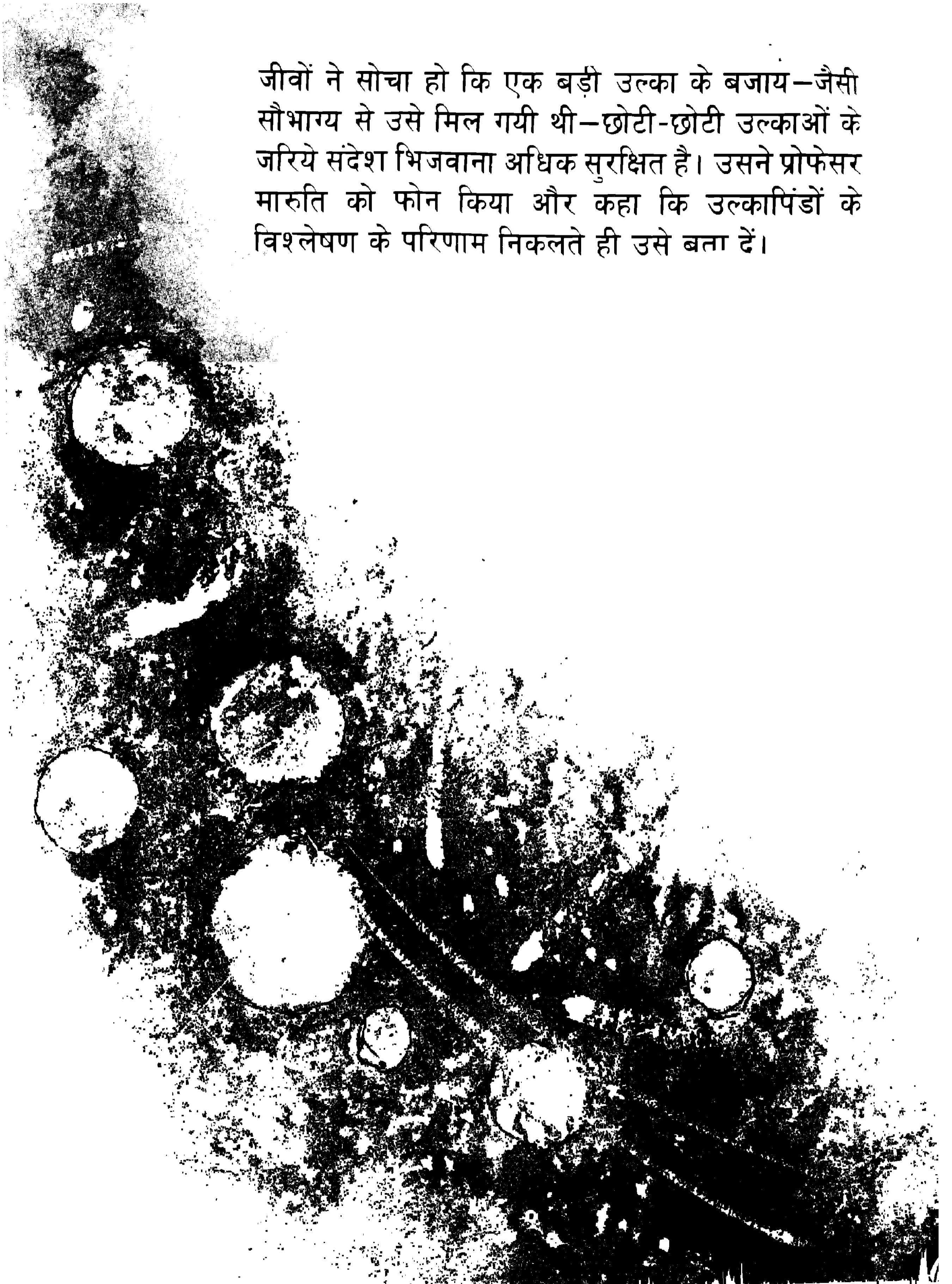
दो दिन बीत गए, आधी रात को उत्तम के फोन की घंटी बजी।

"मैं मारुति बोल रहा हूं। एक खबर है। मानव-मस्तिष्क से संबंधित जो संदेश हमने भेजा था, वह पूरा का पूरा उल्कापिंड में से प्रतिबिंब रूप में मिल गया है।"

"वाह! इनसे तो साफ पता चलता है कि इन्हें भेजने वालों का प्रौद्योगिकी का स्तर क्या होगा। यह इस बात का भी प्रमाण है कि बारह प्रकाशवर्ष के भीतर कोई है जिसे हमारा संदेश मिला है।"

"इतना ही नहीं उत्तम और कुछ भी है। एक उल्कापिंड के भीतर गहरे में हमें कुछ जटिल रासायनिक सूत्र भी मिले हैं।"

विश्लेषण पूर्ण होने के बाद प्रयोगशाला ने रासायनिक सूत्रों को प्रकाशित किया। संचार उपग्रहों के जरिये सारे महाद्वीपों में इन सूत्रों को तत्काल प्रसारित किया गया और पूरी दुनिया के रसायन शास्त्रियों को उनका परीक्षण करने के लिए आमंत्रित किया। उनका और अधिक अर्थ प्राप्त करने के लिए कंप्यूटरों का प्रयोग किया गया।

उत्तम ने देखा कि 21 के लिए 10101 का प्रयोग करने वाली द्विचर प्रणाली का संकेत इसमें भी था। "निश्चित रूप से, 21 के पुन: प्रयोग को अप्रासंगिक नहीं माना जा सकता।" उत्तम ने प्रोफेसर मारुति से कहा।

क्या इसका मतलब यह था कि सुदूर सभ्यता चाहती है कि इन सूत्रों का परीक्षण कर लेने के बाद पृथ्वीवासी उन्हें इसकी रपट भेजें?

भारतीय वैज्ञानिकों पर वैज्ञानिक समुदाय दबाव डालने लगा कि वह इस चुनौती को स्वीकार करके इनमें से कुछ सूत्रों का परीक्षण प्रयोगशाला में करें। थोड़ी शंका इस बात की थी कि एक रासायनिक सूत्र में दिया गया अणुओं का संयोजन संभव हो सकेगा या नहीं। यह विशेष रूप से सज्जित प्रयोगशाला में ही किया जा सकता था जिसमें अत्याधिक उच्च दबाव की व्यवस्था हो ताकि अणुबंध हो सके। एक बार इन सूत्रों के अस्तित्व में आ जाने के बाद तो उनके उपयोग के लिए आगे के प्रयोगों को शुरू किया जा सकता था।

दो विशेष-सज्जित प्रयोगशालाओं को वायुरोधित किया गया ताकि पार्थिव संपर्कों से प्रयोगों पर कोई प्रभाव न पड़ सके। एक बड़े कांच के गुबद के भीतर पृथ्वी का आदिम वातावरण तैयार किया गया। इसमें हाइड्रोजन, पानी के वाष्प, अमोनिया और मीथेन का मिश्रण था, आज जैसा नाइट्रोजन-आक्सीजन का मिश्रण नहीं। इस आदिम मिश्रण को कई दिन तक विद्युत चिंगारियों में से गुजारा गया। इस तरह यह पर्यावरणीय इतिहास के लाखों वर्षों का अप्रत्यक्ष दोहराव था। इससे निकलने वाला परिणाम तो बस चमत्कारी ही था।

ऐसा लगा कि हर प्रकार के जीवन के आधार नाभिकीय अम्लों और प्रोटीनों के नये सम्मिश्रण यही हैं। प्रोफेसर मारुति का दिमाग दौड़ने लगा था। उल्कापिंडों की प्रारंभिक खोजों से तो ऐसा कुछ नहीं निकला था। इससे लगता था कि नयी प्रोटीन संरचना को बनाने के लिए कुछ नये अमीनी-अम्ल भी संभव हैं। यह जीवन के रासायनिक आधार के क्षेत्र में एक अपूर्व उपलब्धि थी।

उन्होंने बड़ी बेताबी से डाक्टर धनवंतरी से कहा, ''आपको तो महीनों तक प्रयोग करने के लिए सामग्री मिल गयी है।''

पूरी दुनिया की विभिन्न प्रयोगशालाओं में महीनों काम होता रहा।

सूत्रों की व्याख्या में कई कठिनाईयां और बहसें सामने आयीं पर अंततः एक नया अमीनी-अम्ल तैयार कर ही लिया गया।

जीवधारियों के प्रोटीन-आधार पर यह नया अमीनी-अम्ल कैसे क्रिया करेगा?
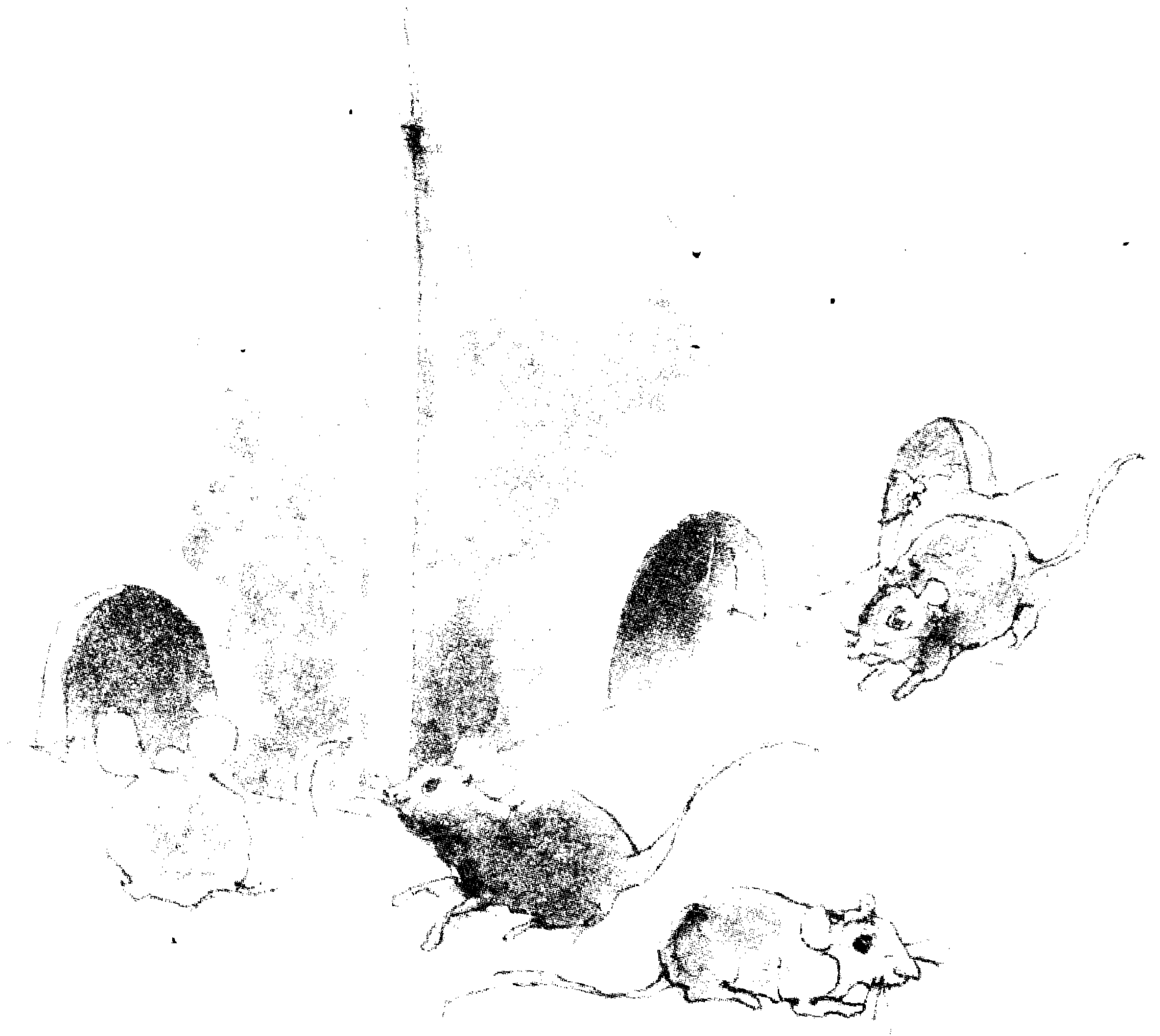
अमरीकी वैज्ञानिकों ने सलाह दी, "इस नये अमीनी-अम्ल सहित सभी अमीनी-अम्लों का प्रयोग मानव-शरीर पर ही किया जाये।" रूसियों ने इसके प्रयोग के विरूद्ध चेतावनी दी। उन्हें डर था कि ये सूत्र कहीं विषाणुओं में न बदल जायें। कहीं पृथ्वी को मानव विहीन करने के लिए बाह्य अंतरिक्ष वालों ने जानबूझ कर ही इसे न भेजा हो।

चेतावनी का असर पड़ा। तय हुआ कि इस नये अमीनी-अम्ल का परीक्षण पहले जानवरों पर ही किया जाये।

कुछ चूहों को अमीनी-अम्ल मिला विशेष भोजन दिया जाने लगा। कुछ ही सप्ताहों में उनकी स्मरण शक्ति में विलक्षण सुधार हुआ। एक ही खोज के बाद वे एक भूलभुलैया में से चटपट बाहर निकल गये। इस प्रयोग से उत्साहित होकर जीवरसायनज्ञों ने इस रसायन का प्रयोग मानव शरीर पर करने का निर्णय कर लिया। पर इस प्रयोग के लिए किसी ने भी स्वयं को प्रस्तुत नहीं किया।

जीवरसायनज्ञों को बड़ी निराशा हुई। उन्होंने मानसिक रोगियों के अस्पताल के डाक्टरों की अनुमति मांगी कि वे उन रोगियों पर इस अमीनी-अम्ल का परीक्षण करने की अनुमति दे दें जिनके ठीक होने की कोई आशा न हो। उन्होंने विश्वास दिलाया कि अमीनी-अम्ल से कोई हानि नहीं हो सकती। बल्कि, इसके विपरीत ये मस्तिष्क को उत्तेजित करता है। इससे अच्छी और क्या बात होती। अनमति मिल गयी।
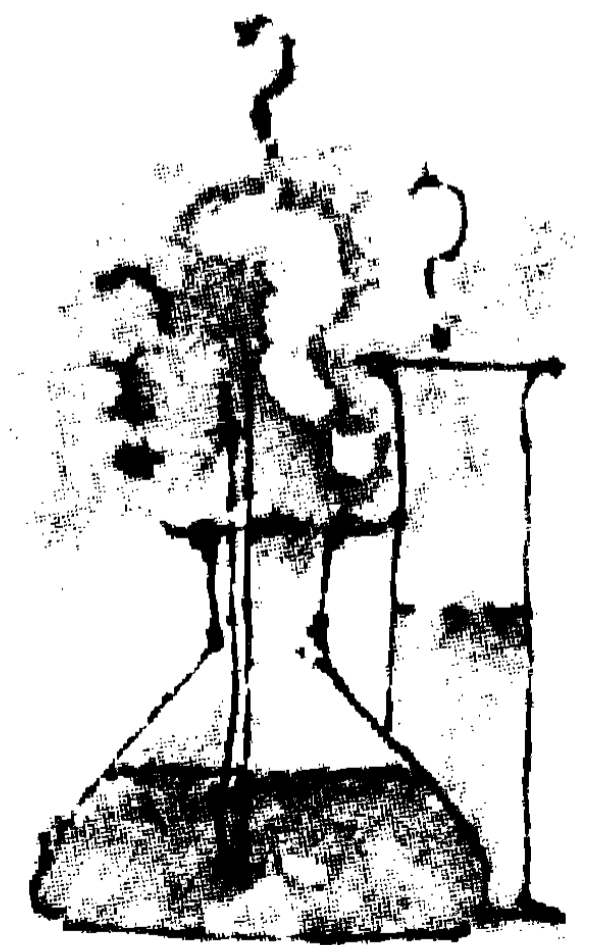
एक प्रतिभा गायब हो गयी

दो लड़कों, राम् और लक्ष्मण तथा एक लड़की, तरंगिनी को, जिनका दिमाग पूरी तरह विकसित नहीं हो पाया था और लगता था कि कभी होगा भी नहीं, इस प्रयोग के लिए चुना गया।

एक महीने के भीतर उनकी बुद्धि बढ़ने लगी। वे स्पष्ट वाक्यों में बोलने लगे और जल्दी ही पढ़ने की भी कोशिश करने लगे। सभी को खुशी हुई।

कुछ ही हफ्तों के बाद बच्चों ने उच्च तकनीकी पुस्तकों की मांग की। तत्काल उन्हें सहायता दी गयी। उन्हें देखने वाले बाल-चिकित्सक विस्मित हो गये।

दो वर्ष में बच्चे गणितीय समस्याओं और जटिल इंजीनियरी प्रश्नों को हल करने लगे।

वे लतीफों पर हंसते भी थे, पर आश्चर्यजनक बात यह थी कि ये तीनों बच्चे न तो प्यार दिखाते थे और न गुस्सा। यदि वे कहीं गिर जायें, धक्का लग जाये या चोट लगे तो ऐसा नहीं लगता था कि उन्हें कष्ट होता है।

''यह निश्चित रूप से नये अमीनी-अम्ल का कमाल है'', डाक्टर धनवंतरी ने कहा, ''पर मानव-मस्तिष्क के रसायनशास्त्र में इसकी ठीक-ठीक प्रक्रिया क्या होती है. यह अभी तक रहस्य है।''

एक अति-बुद्धिमान जाति के निर्माण के लिए इस अमीनी-अम्ल के बड़े पैमाने पर उत्पादन की जोरदार वकालत की गयी। लेकिन इसके बाद के प्रयोग असफल रहे। कितनी ही सावधानी और विशुद्धता बरतने के बावजूद यह दुर्लभ अमीनी-अम्ल तैयार न किया जा सका।

डाक्टर धनवंतरी ने कहा, "पहले तो हमने सोचा कि हमारे उपकरणों में कुछ खराबी रह गयी होगी। पूरी दुनिया की श्रेष्ठ प्रयोगशालाओं में यह

प्रयोग बार-बार किया गया। पर परिणाम अभी तक नकारात्मक ही है।''

प्रोफेसर मारुति बोले, ''हो सकता है बाहय अंतरिक्ष के दूरवासी यह न चाहते हों कि यहां अधिक अति-बुद्धिमान लोग हों।''

डाक्टर धनवंतरी ने कहा, ''तुम जानते हो, जो कुछ यहां हुआ है उनकी एक तस्वीर हमने दूसरे संदेश में भेजी है और उनकी दुनिया का विवरण मांगा है--पता नहीं वह कहीं पहुंचा भी है या नहीं!''

उनकी इस बातचीत को लक्ष्मण की तेज आवाज ने भंग कर दिया। वह भागता हुआ कमरे में घुस आया था। जिसने कभी किसी तरह की भावुकता न दिखायी हो, उसकी आवाज असामान्य रूप से गंभीर थी। ''रामू गायब है। पता नहीं कहां चला गया है। रामू गायब है...'' वह चिल्लाया।

यह खबर आग की तरह फैल गयी। बहुत तलाश की गयी। हर संभावित जगह उसे तलाशा गया। हर परिवार से उसे तलाश करने के लिए कहा गया। सारे हवाई अड्डों पर चेतावनी दे दी गयी। श्रीहरिकोटा से जाने वाली नौकाओं पर बैठे सभी बच्चों की विशेष पुलिस दल जांच करने लगा। रामू से मिलते-जुलते हुलिये का कोई नहीं मिला। अंतर्राष्ट्रीय पुलिस को सावधान कर दिया गया। प्रत्येक महाद्वीप में उपग्रहों ने उसकी तस्वीर को टेलीविजन पर तत्काल प्रेषित किया। बड़े-बड़े पुरस्कारों की घोषणा की गयी।

दिन बीतते गये, पर रामू की कोई खबर नहीं मिली। सुरक्षा के कमजोर इंतजाम की निंदा होने का परिणाम यह निकला कि लक्ष्मण और तरंगिनी की आजादी बिल्कुल खत्म कर दी गयी।

लोगों को विश्वास था कि एक दिन

रामू फिर से प्रकट होगा। पर यह कोई हिसाब लगाकर की गयी भविष्यवाणी नहीं थी, केवल इच्छाजनित विश्वास भर था।

धरती के लोग रामू को भूल गये। उस जैसे लगने वाले हर बच्चे को ध्यान से देखना उन्होंने बंद कर दिया था। वह एक दन्तकथा बन गयी थी।

तभी अचानक, पूरे अमरीका में सायरन गूंजने लगे। क्या यह खतरे की घंटी थी, या परमाणु आक्रमण? जवाबी हमले के लिए प्रतीक्षा कर रहे विमान तैयार होने लगे। कारें और गाड़ियां रूक गयीं। परमाणु धमाके की आशंका से आतंकित लोग सुरक्षित स्थानों की ओर भागने लगे। फिर अचानक ही यह सब खत्म भी हो गया। रेडियो और लाउडस्पीकरों ने इस आतंक को शांत किया और इसका कारण बताया:

''आज सुबह, देश के सबसे बड़े प्रक्षेपणास्त्र भंडार के गुप्त नियंत्रण कक्ष में एक गैर-यूरोपियन बच्चा घुस आया था। यह अभी तक रहस्य है कि वह बच्चा कैसे इलैक्ट्रोनिक रोध को पार कर गया। गार्ड ने चेतावनी संकेत बजा दिया जिससे स्वत: ही चेतावनी फैल गयी। घबराने की कोई बात नहीं है।''

प्रोफेसर मारुति तत्काल प्रक्षेपणास्त्र केंद्र की ओर भागे। प्रवेश पूरी तरह वर्जित था। वे भीतर के व्यक्ति से इंटरकाम पर ही बात कर पाये।

रक्षक ने बच्चे का हुलिया बताने से इंकार कर दिया। प्रोफेसर मारुति माइक पर ही चिल्लाये, ''हो सकता है वह खोया हुआ रामू हो, हमारी प्रतिभा!''

नियंत्रण कक्ष के रक्षक पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। ''हमारे पास यहां भी बहुत-सी प्रतिभाएं हैं। मैं आपको अंदर नहीं आने दे सकता।''

सौभाग्य से, उसी समय उनके एक मित्र, डाक्टर युग, जो वहां काम करते थे, नियंत्रण कक्ष से बाहर निकले।

प्रोफेसर मारुति से पूरा विवरण जान लेने के बाद डाक्टर युग अंदर

जाने और यह जांचने के लिए कि रामू अंदर ही है, तैयार हो गये। उन्होंने पहले भी प्रयोगशाला में उस लड़के को देखा था जिसका हुलिया प्रोफेसर मारुति के विवरण से मिलता था।

नियंत्रण कक्ष का भारी दरवाजा एक बार फिर बंद हो गया और एक बार फिर प्रोफेसर और रक्षक की निगाहें उस चुप्पी में एक दूसरे से टकरायीं।

एक चिंताग्रस्त प्रतीक्षा। और आखिर में मुस्कराते हुए डाक्टर युग प्रकट हुए और उन्होंने अपने मित्र को सूचना दी कि जो बच्चा भीतर है, वह रामू ही है। प्रोफेसर मारुति खुश हो गये। अंतरिक्ष का वरदान जीवित था!

जहाज और प्रक्षेपणास्त्रों पर संकट

लक्ष्मण और तंरगिनी अपने मित्र रामू के गायब होने से पूरी तरह से निश्चिंत दिख रहे थे। उनके चेहरों पर जरा भी भावुकता नहीं थी। कोई नहीं जानता था कि वे क्या महसूस कर रहे थे—अगर कर रहे थे तो!

प्रोफेसर मारुति द्वारा रामू के पते-ठिकाने के रहस्योद्‌घाटन का लोगों ने खुशी से स्वागत किया। पर रामू के दोनों मित्रों के चेहरों पर मुस्कान की एक रेखा तक न दिखी। वे कुछ गणितीय समस्याओं में उलझे हुए थे।

अमरीका से लौटने के कुछ ही समय बाद रामू को प्रेस वालों ने घेर लिया। अपनी शरारत पर

पूछे गये ढेर सारे सवालों का उसने जवाब दिया। जब उससे पूछा गया कि वह उस खतरनाक क्षेत्र के भीतर क्यों चला गया तो उसने जवाब दिया, ''मैं जानता था कि इसमें ज़रा जोखिम है। लेकिन मैंने सोचा कि मुझे अपना काम जारी रखना चाहिए क्योंकि यह शांति की कुंजी है। दोनों पक्षों के नाभिकीय अस्त्रागार के मूल में डर ही तो है।''
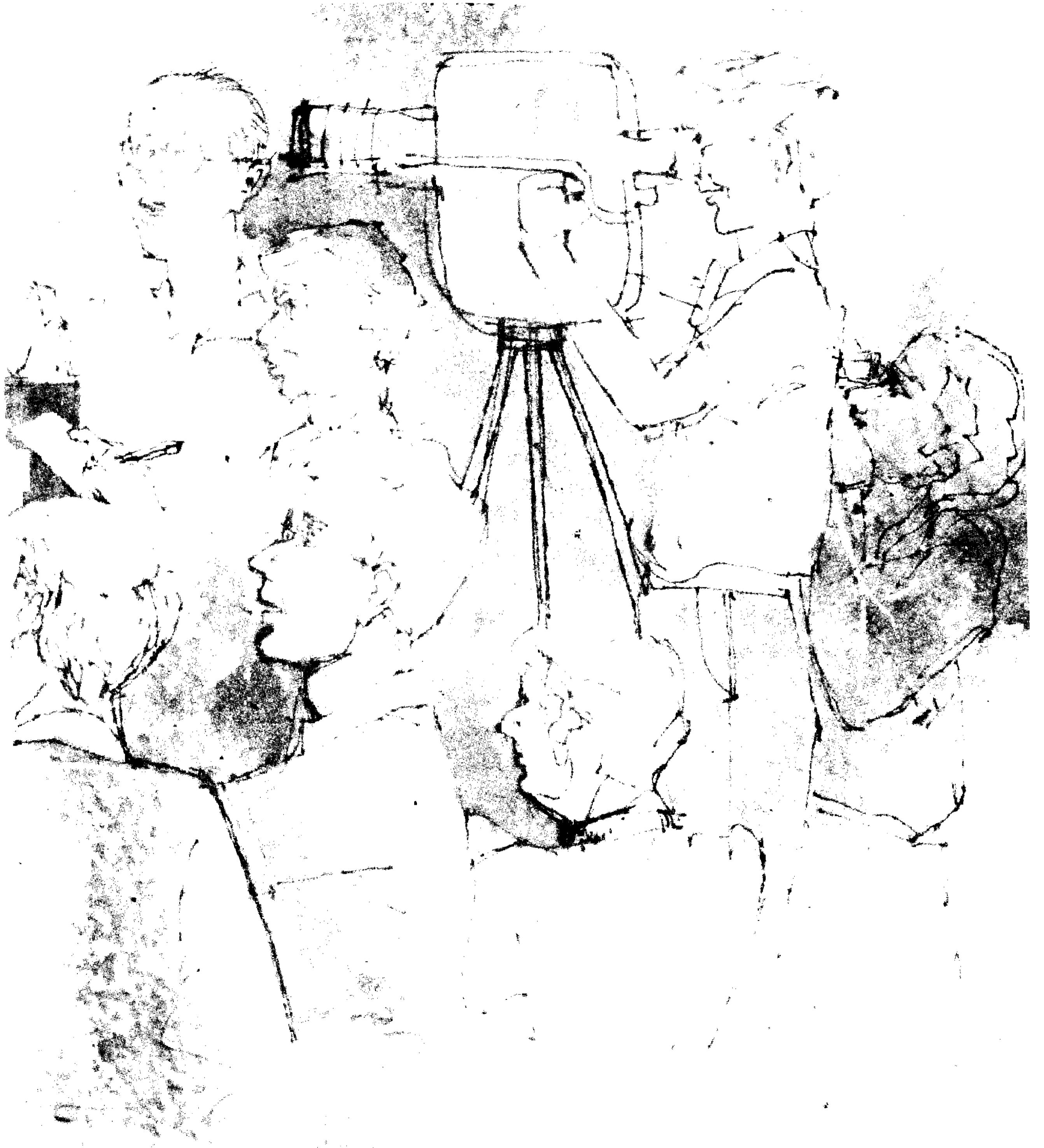
पूछा गया कि वह कमरे के अंदर कैसे चला गया। रामू ने बताया, "दरअसल प्रक्षेपणास्त्र नियंत्रण भंडार होने के कारण उस स्थान की काफी मजबूत सुरक्षा की गयी थी। पर मुझे तो अंदर जाना था और मैं गया। मैं एक उच्चाधिकारी के साथ बात करने लगा। पहले तो उसने सोचा कि मैं एक छोटा बच्चा हूं लेकिन मैं बात करता रहा। जिन समस्याओं में वह उलझा हुआ था, उनके बारे में कई बातें उसे बतायीं। वह मुझे अपने आफिस में ले गया। फिर उसने चाय बनायी। हम बात करते रहे। वह भूल ही गया था कि मैं एक छोटा बच्चा हूं। उसने मुझे कुछ चीजें दिखायीं। तभी उसे याद आया कि मैं तो छोटा बच्चा हूं और उसने सोचा कि मेरे लिए कुछ चाकलेट ले आये। जब वह चाकलेट तलाशने लगा, मैं अंदर खिसक गया। मुझे पता था कि मुझे क्या करना है। मैंने पूरा हिसाब लगा रखा था। मैं उस पूरी प्रणाली को बेकार कर देने के लिए तैयार था। बस इतना ही।"

"पर तुम्हारे उच्चाधिकारी मित्र का क्या कहना है?"

"पहले एकाएक तो उसकी समझ में ही कुछ नहीं आया," रामू हंसा, "वह बहुत परेशान था। लगभग चिल्ला रहा था। मैंने उसका सारा किया-कराया बरबाद कर दिया था।"

''क्या तुम्हें उसके लिए दुख नहीं है?'' एक संवाददाता ने पूछा।

''नहीं, मैंने एक उचित काम किया है। यह तो उसके आगे आना ही था।''

संवाददाता उसके हर शब्द को लिख रहे थे। एक ने पूछा, ''लेकिन तुम उस पूरी प्रणाली को बेकार क्यों करना चाहते थे?''

रामू ने कहा, ''इसलिए कि दुनिया को नाभिकीय युद्ध की धमकी से मुक्त कर सकूं।''

''पर यह तो तुमने एक ही भंडार में किया है। और सब भण्डारों का क्या करोगे?''

''मेरा इरादा सभी को बेकार करने का है।''

''इसमें तुम्हें कभी सफलता नहीं मिलेगी, सच्चाई कुछ और ही है।''

''देखते रहिए, यह होगा।''

उन्हीं दिनों दूसरी समस्या आ खड़ी हुई थी। दुनिया भर के बंदरगाहों पर भारी तैल-चिकनाई एकत्र होती जा रही थी जिससे जहाजरानी में बाधा पड़ रही थी। कोई भी सरकार इसे प्रभावकारी ढंग से साफ नहीं कर पा रही थी। सभी समुद्री जीवों और तटीय निवासियों के लिए खतरा पैदा हो गया था। क्या किया जाये? क्या ये बच्चे मदद कर सकते हैं? लक्ष्मण और तंरगिनी ने रामू के बिना कुछ भी करने से मना कर दिया था। पर अब तो वह लौट आया था। कप्तान उत्तम उनसे मिलने के लिए आया। उसने उन्हें तैल के खतरे से अवगत कराया। ''क्या तुम इससे निपट सकते हो? क्या तुम भरसक प्रयत्न करोगे?''

''हम भरसक प्रयत्न करेंगे।'' रामू ने तटस्थ स्वर में कहा, ''हम प्रयत्न करेंगे पर हम वादा नहीं करते कि कुछ हो सकेगा और अगर हमें इसका हल मिल भी जाये तो हम तब तक प्रकट नहीं करेंगे, जब तक कि सारे नाभिकीय प्रक्षेपणास्त्र बेकार नहीं कर दिये जाते।''
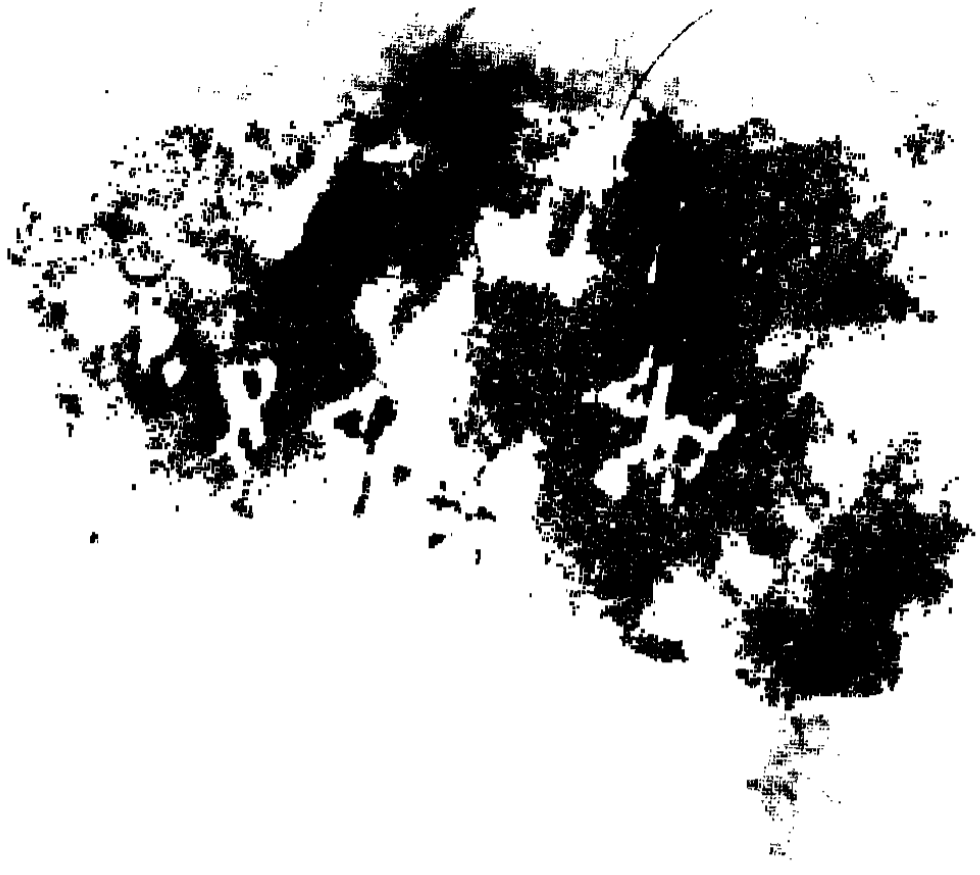
सितारों, हमें बचाओ

बच्चों ने तैल प्रदूषण का अपना विश्लेषण शुरू कर दिया। उन्होंने कई तरीकों का अध्ययन किया पर सफलता हाथ नहीं लगी। इस समस्या का हल खोजने के लिए एक नयी तकनीक की आवश्यकता थी। आखिर इन तीन प्रतिभाशाली बच्चों को भी अपनी असहायता प्रकट करनी पड़ी। क्या बाह्य विश्व के जीव अधिक सफल हो सकते हैं? यदि ऐसा है तो बच्चे ही जल्दी से प्रश्न तैयार कर सकते हैं। बच्चे तैयार हो गये पर फिर वही शर्त रखी। उनके हल को कार्यरूप देने से पहले सभी देशों को अपने नाभिकीय शस्त्रागार नष्ट करने होंगे।

जब उनकी इस चेतावनी को प्रकट किया गया तो कुछ ताकतें राजी हो गयीं, पर कुछ ने पांव पीछे हटा लिये। पर इन तीनों बच्चों ने हठ पकड़ ली थी। आखिर इन देशों को भी झुकना पड़ा।

आश्वासन मिलने के बाद लोग चाहते थे कि लक्ष्मण, रामू और तरंगिनी बाहय अंतरिक्ष के लिए संदेश के अपने काम में लग जायें। पर उन्हें शांति से नहीं रहने दिया गया। पृथ्वी के लोग उस दूसरी दुनिया के बारे में जानना चाहते थे, जहां से भविष्य में उत्तर आ सकता था। इसलिए उन्होंने उन ग्रहों की संख्या के बारे में प्रश्न पूछ-पूछ कर बच्चों को तंग कर दिया, जिन पर जीवन मिल सकता है। तरंगिनी ने इच्छित संख्या बता दी—दस

हजार। पहले उसने उन सितारों की गणना की, जिनका ग्रहमंडल है, फिर ग्रहमंडल के उन ग्रहों की गणना की जिनमें जीवन के लिए उपयुक्त परिस्थितियां मौजूद हैं, फिर इनमें से कितने ग्रहों में जटिल आकार-प्रकार के जीवों की संभावना है और इसके बाद कि कितने ग्रहों में इतनी बुद्धि है कि अंततारकीय संचार की क्षमता प्राप्त कर लें। रामू ने तो किसी प्रौद्योगिक सभ्यता की औसत आयु की गणना भी कर ली थी।

एक अनुसंधानकर्ता ने पूछा, "उनकी आयु की व्याख्या आप कैसे करेंगे?"

रामू ने जवाब दिया, "सभ्यता जितनी विकसित होगी धरती के लोगों के सामने आने वाली कई समस्याओं को वह काबू कर लेगी। वहां पर अपार्थिव जीवों ने पर्यावरणीय अवक्रमण को संशोधित कर लिया होगा, घातक हथियारों को समाप्त कर दिया होगा और जनसंख्या पर नियंत्रण कर लिया होगा।"

"कई सभ्यताएं तो हमारी दुनिया से श्रेष्ठ होंगी," रामू ने अपनी बात जारी रखी, "कुछ में जीवन के उद्भव के लिए आदर्श स्थितियां होंगी।"

अब तक बाह्य अंतरिक्ष में भेजा जाने वाला संदेश भी तैयार हो गया था। इसे विशेष रूप से संकेतों में बदला गया। बर्नार्ड सितारे की ओर इसे प्रेषित करने में तीन घंटे लग गये।

संदेश गुप्त रखा गया। पर एक नुक्ता जाहिर हो ही गया। ऐसा बताया था कि इस संदेश में धरती से बाहर की सभ्यता से वह आग्रह भी किया गया था कि पृथ्वी पर कोई सूक्ष्मजीव न भेजे। यह आग्रह आरवी के वैज्ञानिकों ने तैल समस्या के हल के लिए मुख्य संदेश के साथ जोड़ दिया था।

वैज्ञानिक क्षेत्रों में राहत की सांस ली गयी थी। लोगों को डर था कि कहीं बाह्य अंतरिक्ष वाले यहां हानिकारक जीवाणु न फैला दें जिनसे रहस्यमय और घातक विषाणु और बीमारियां फैल जायें।
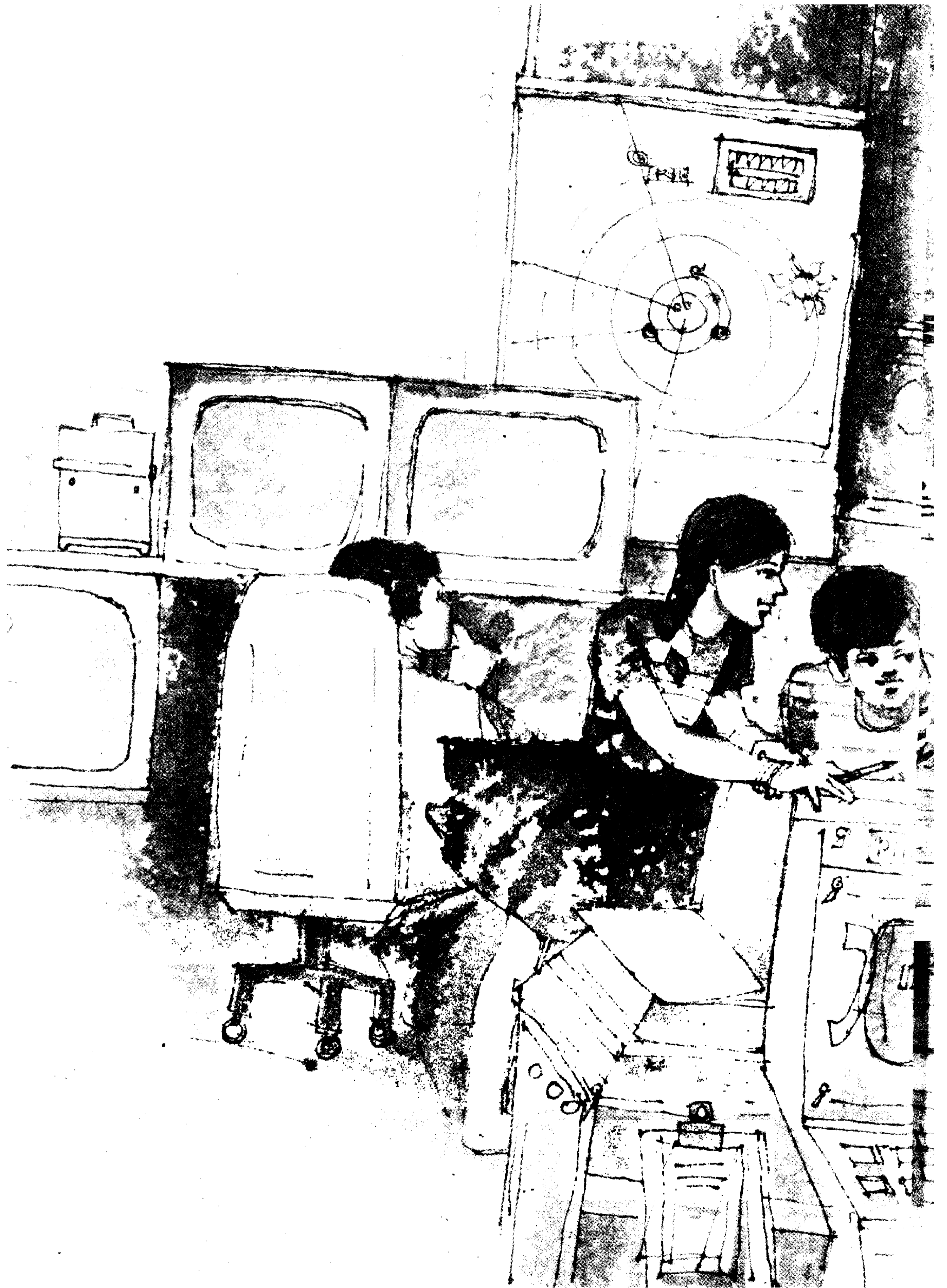
आखिरकार संदेश वापस मिल गया।

लक्ष्मण, रामू और तरंगिनी ने जटिल कंप्यूटरों की सहायता से उसका विश्लेषण किया। उन्होंने चिकनाई को विघटित करने का सूत्र जल्दी ही
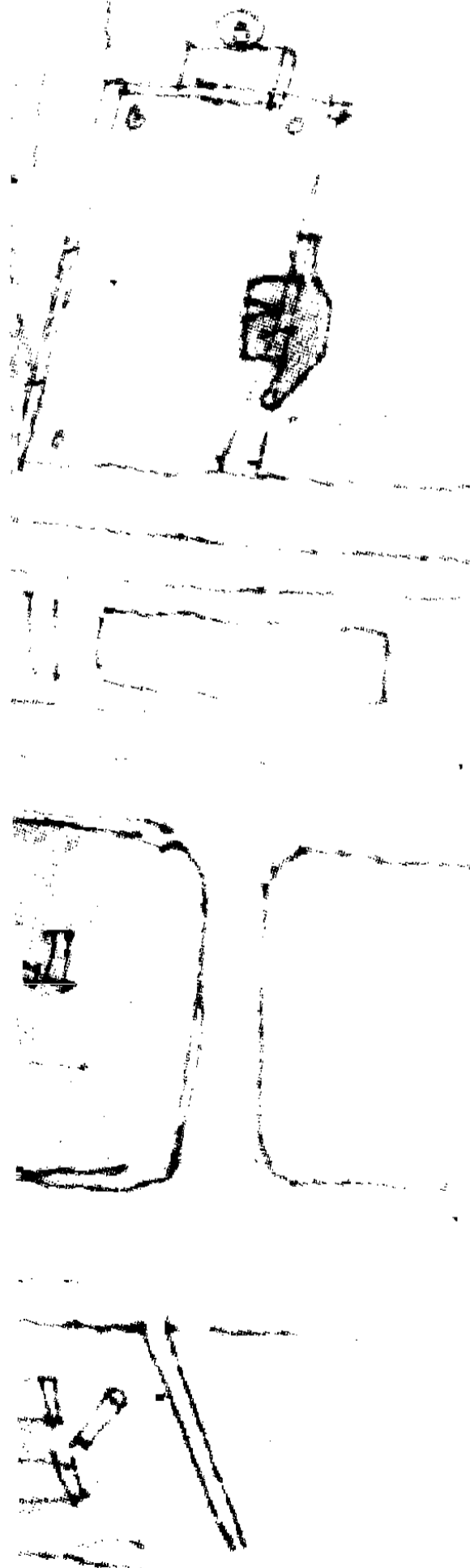
खोज निकाला हालांकि इस काम के लिए इसके उपयोग का कोई विशेष तरीका बताया नहीं गया था। यह सूत्र इसके अलावा भी अन्य इतनी ही महत्वपूर्ण समस्याओं में भी सहायक हो सकता था जिससे पृथ्वी के लोगों को लाभ हो सकता था।

इसी बीच कुछ लोग बड़ी बेताबी से इस नयी खोज के हानि-लाभों का विश्लेषण करने लगे। एक ओर तो दुनिया के समुद्री मार्गों के साफ होने की संभावना का स्वागत हुआ तो दूसरी ओर दुनिया के सारे नाभिकीय शस्त्रागारों के बेकार करने की शर्त भी थी। इसका अर्थ था शस्त्र व्यापारियों के लिए घाटे का भविष्य। इसे रोका ही जाना चाहिए। शस्त्र व्यापारियों ने एक गुप्त सभा की और अपनी कार्य-प्रणाली तय की।
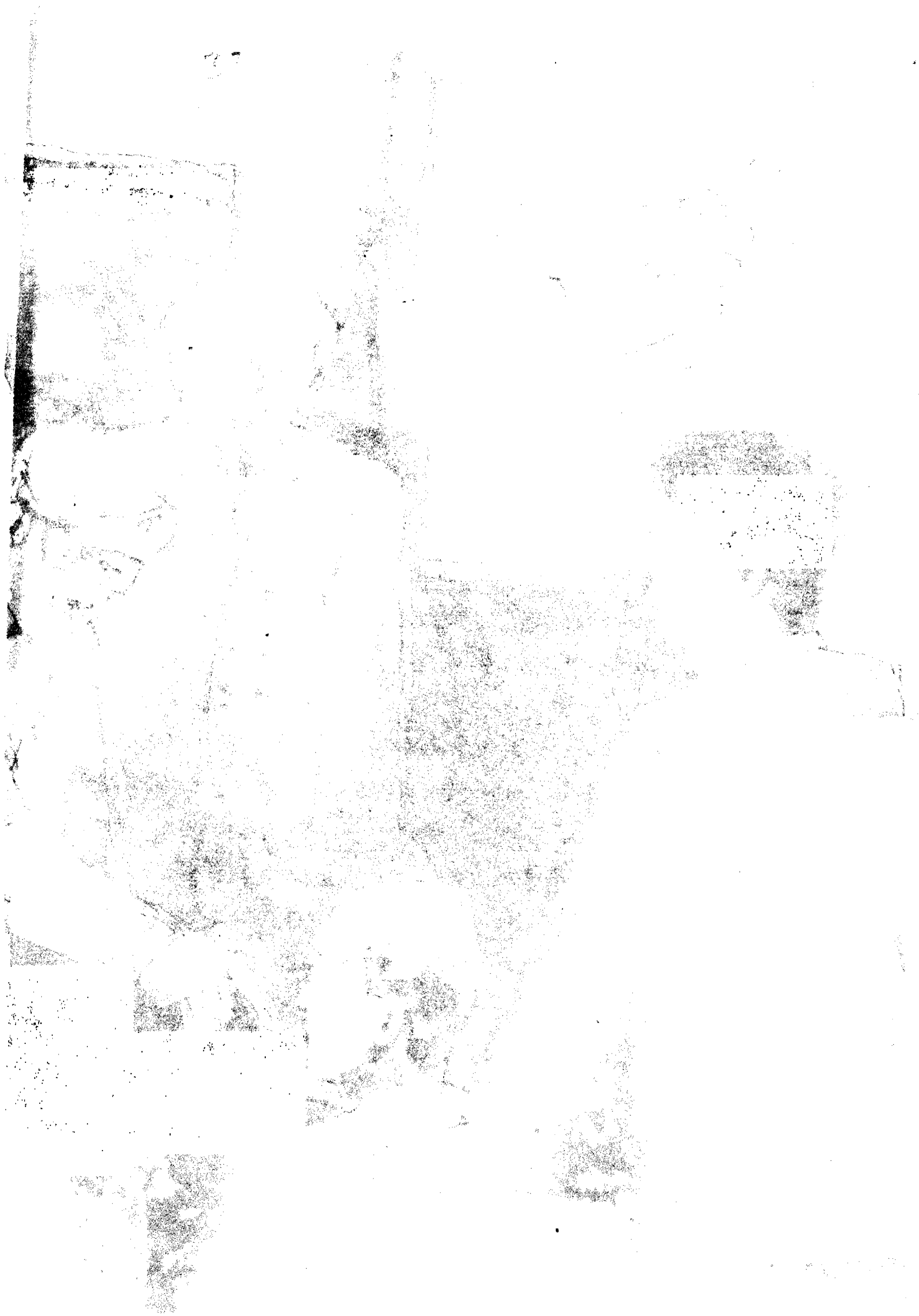
आतंकवादी षडयंत्र

''रामू, लक्ष्मण, तरंगिनी!'' ये नाम कई बार दोहराये गये। पर कोई जवाब नहीं मिला। इन तीनों का कोई पता नहीं था।

चेतावनी प्रसारित की गयी। बाहर निकलने के हर संभावित रास्ते पर जांच की गयी। तीनों बच्चे कहीं गायब हो गये थे।

लोग अनुमान लगाने लगे। कुछ ने कहा कि ये बच्चे इतने मूर्ख नहीं हैं कि बमों और प्रक्षेपणास्त्रों को बेकार करने संबंधी बेमन से किये गये लोगों के वादे को सहज मानकर स्वीकार कर लें। यह सुझाव भी था कि वे किसी दूसरी दुनिया की तरफ उड़ान भर चुके होंगे।

अचानक एक खबर फैल गयी।

आतंकवादियों के एक गिरोह के कुछ लोग हवाई-अड्डे पर टाइमबम रखने की कोशिश करते हुए रंगे हाथों पकड़े गये। पुलिस की गहरी पूछताछ से उन बच्चों के बारे में एक थरथराने वाली सूचना मिली।

'एक्स' नाम से जाने जाने वाले इस आतंकवादी गिरोह ने स्वीकार किया था कि अंतर्राष्ट्रीय शस्त्र व्यापारी परिषद ने उन्हें उन बच्चों को अगुवा करने के लिए नियुक्त किया है। जब वे बच्चों के घर में घुसने में

सफल नहीं हो पाये तो उन्होंने बच्चों को बहलाकर बाहर निकालने का निश्चय किया। उन्होंने सुपर-चैस का एक बढ़िया रूप तैयार किया, पर उसमें तत्काल पकड़ी जाने वाली एक गलती छोड़ दी। तब गिरोह के दो लोग बच्चों के पास आये। थोड़ी सी बातचीत के बाद सब बगीचे में आ गये जहाँ संगमरमर का चैसबोर्ड रखा था। तरंगिनी उस गलती को प्रयोग द्वारा दिखाना चाहती थी ताकि कोई मूर्ख भी उसे समझ सके।

थोड़ी देर बाद झाड़ियों में छिपे गिरोह के लोगों ने धावा बोल दिया। वे बच्चों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने लगे। बच्चे कुछ सोच नहीं पा रहे थे। आखिर एक जगह वे अंधेरे में रह गये। तरंगिनी बोली, "मेरे पीछे आओ।" वे सब इनफ्रा-रेड प्रकाश में भी देख सकते थे, तरंगिनी में यह गुण अधिक था। इस तरह वे बचकर बाहर निकल आये। आतंकवादियों को उनके गायब होने का पता चला तो वे उन्हें खोजने लगे, पर अंधेरे में कुछ दिखाई नहीं दिया।

ये आतंकवादी ही अब पुलिस के कब्जे में थे। इन लोगों से अभी सवाल पूछे ही जा रहे थे कि उपग्रह प्रक्षेपण केंद्र से एक समाचार आया कि कुछ अज्ञात व्यक्ति केंद्रीय कक्ष में चले गये हैं और वहां से एक उपग्रह में बैठकर उड़ गये हैं। वे अभी उन लोगों को पहचान नहीं पाए हैं, जो अंतरिक्ष यात्रियों का रूप धरकर आये थे।

प्रोफेसर मारुती एकदम समझ गये कि वे और कोई नहीं, तीन प्रतिभाशाली बच्चे ही थे। उन्हें बहुत दुख था कि आदमी ने मानव-मस्तिष्क की कार्यप्रणाली के संबंध मे नयी जानकारी मिलने का सुनहरा अवसर खो दिया है।
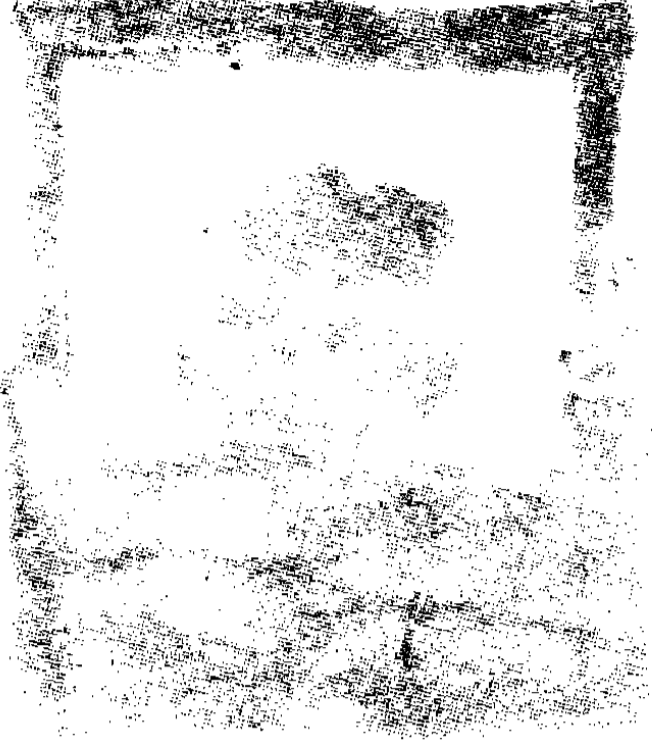
दुखद घटना

नैनीताल में उपग्रह सतर्कता केंद्र के रात्रि दल के प्रमुख को एक झटका लगा। एक उपग्रह रास्ते से हट गया था। वह अपने तयशुदा मार्ग पर नहीं चल रहा था। इससे आने वाले संकेत भी भिन्न थे। गहरी मंत्रणा होने लगी।

"ऐसा लगता है कि लड़ाई छिड़ गयी है!" मुख्य नियंत्रण का प्रमुख चिल्ला उठा, "एक उपग्रह का मार्ग बदला जा रहा है!"

तत्काल पारस्परिक संपर्क स्थापित किए गये। इसी समय जिन अन्य केंद्रों ने इस घटना को देखा था, वे सभी संपर्क में आये, तयशुदा आचार संहिता के अनुसार सभी ने परस्पर आंकड़ों का आदान-प्रदान किया।

प्रोफेसर मारुती पहले व्यक्ति थे जिनका कहना था कि उपग्रह की कक्षा की अनियमितता उन तीन बच्चों का कारनामा हो सकती है। उनके विचार का तत्काल खंडन कर दिया गया। वे बच्चे इतने कुशल कैसे हो सकते थे कि कक्षा के भीतर से अंतरिक्ष यान के मार्ग को बदल सकें?

अचानक अंतरिक्ष से एक ऊंची और स्पष्ट आवाज रिकार्ड की गयी। रामू की आवाज को तत्काल पहचान लिया गया। उसने कहा कि वह और उसके साथी कक्षा में कुशल और सुरक्षित हैं। उसने अपहरण का सीधा जिक्र न करते हुए कहा कि धरती के लोग अभी तक दुर्भावना से ग्रस्त हैं।

उसकी इस संक्षिप्त कटु टिप्पणी पर लोगों ने कई तरह की प्रतिक्रियाएं

प्रकट कीं। पर एक राहत भी मिली कि तीनों बच्चों को किसी तरह की हानि नहीं पहुंची है। उनके पुराने मित्र कप्तान उत्तम को दुख था कि उन्हें ऐसी हिंसा का सामना करना पड़ा था। तैल प्रदूषण से उलझे हुए विशेषज्ञ तो विशेष रूप से दुखी थे। उसे साफ करने का अंतिम अवसर भी खो गया था।

अन्य आतंकवादी जो खुले घूम रहे थे और भी घबरा गये। उन्हें डर था कि कहीं उनका हुलिया न बता दें। जो भी हो, बच्चों को खत्म करने का उनका अभियान सफल नहीं हो पाया था और उन्हें वादे की आधी रकम ही मिल पायी थी। शस्त्र व्यापारी उनसे बहुत नाराज थे। उन्हें संकेतों से यह भी बता दिया गया था कि उनके छिपने की सूचना पुलिस को दे दी जाएगी।

आतंकवादी बहुत परेशान थे। उन्होंने तय किया कि बच्चों को कब्जे में लेना ही होगा। उन्होंने एक विशेष अंतरिक्ष शटल यान किराये पर लिया और उड़ गये। यान पर साथ में गये एक अनुभवी अंतरिक्ष यात्री ने कक्षा और मिलन-स्थल की प्रक्रिया की गणना कर ली थी।

वे निकट आ गये थे। बच्चों का यान अब केवल सौ मीटर की दूरी पर था!

आतंकवादी कृत्रिम गुरुत्व वाले अपने विशेष रोधी कक्ष से बाहर नहीं आ सकते थे। पर उन्होंने हिसाब् लगा लिया था कि दूसरे यान को कैसे नष्ट किया जाएगा और कैसे बच्चों को कब्जे में लिया जाएगा।

दूसरे अंतरिक्ष यान की ओर सबसे पहले तरंगिनी का ध्यान गया। उनके मैत्री संकेत का भी प्रत्युत्तर मिला। पर दूसरे यान की कई विशेषताओं ने तरंगिनी का ध्यान खींचा। वह और उसके साथी अधिक शंकित हो गए!

बच्चों ने रेडियो तरंगों के जरिये उस अज्ञात यान का विवरण भेजा। अब तक वे समझ गये थे कि यह जरूर उनकी उस महान योजना के शत्रुओं का ही होगा। उन्होंने अपनी मांग को दोहराया कि पृथ्वी के नाभिकीय प्रक्षेपणास्त्रों को बेकार और नष्ट कर दिया जाये। उन्होंने कहा कि

उनकी मांग मान लिये जाने के बाद वे तैल प्रदूषण पर नियंत्रण पाने वाले सूत्र बता देंगे।

एक अंतरिक्ष केंद्र से मिलने वाले समाचार से पुष्टि हो गयी कि बच्चों की कक्षा के निकट आने वाला यान निश्चित रूप से उन आतंकवादियों का ही हैं। डाक्टर धनवंतरी और प्रोफेसर मारुती ने एक संयुक्त बयान जारी करके दुनिया के वैज्ञानिकों से अपील की कि बच्चों को उस घेराबंदी से मुक्त किया जाए। राष्ट्र संघ की आम सभा में आतंकवादियों की भर्त्सना करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया। उन्हें तत्काल वापस आने का आदेश दिया। पर अपने इस आदेश को लागू करवाने का कोई रास्ता नहीं था।

मुकाबला जारी रहा। वैज्ञानिक समुदाय चिंतित हो गया।

'बचाव अभियान' शुरू हुआ। एक विशाल शटल छोड़ा गया। कप्तान उत्तम उसके सह-चालक थे। यह घोषणा की गयी कि बच्चों की वापसी को सुरक्षित किया जायेगा पर ठीक-ठीक कार्यपद्धति को गुप्त ही रखा गया ताकि कहीं आतंकवादियों का गिरोह इसे विफल न कर दे।

जैसे ही वह विशाल अंतरिक्ष यान बच्चों के निकट आया, परस्पर शुभकामनाओं का आदान-प्रदान हुआ। फिलहाल संकट टल गया था।

पृथ्वी के लाखों दर्शकों को उस अंतरिक्ष यान से टेलीविजन के सीधे प्रसारण से यह दृश्य दिखाया गया। कप्तान उत्तम बच्चों के यान का

निरीक्षण करने के लिए बाहर निकल आये और अंतरिक्ष में तैरने लगे। उन्होंने कक्ष के अंदर झांका और बताया कि बच्चे ठीक-ठाक हैं, सभी उनकी सुरक्षित वापसी की कामना करने लगे।

अचानक एक चेतावनी गूंजी। कप्तान उत्तम को वापस आने का आदेश दिया गया। अंतरिक्ष में करीब दस लाख किलोमीटर की दूरी पर उल्कापात दिखाई दिया था। बच्चों को तत्काल बचाया जाना चाहिए।

उन्हें संकट की सूचना दी गयी। रामू खतरे को भांप गया पर उसने बताया कि वे लोग अभी तक पृथ्वी पर तैल संकट को दूर करने के लिए बाह्य अंतरिक्ष के जीवों के भेजे हुए सूत्रों पर काम कर रहे हैं। इसका अर्थ था कि अभी समय लगेगा। अपने पर मंडरा रहे उस खतरे के बावजूद बच्चे मानवता की भलाई के लिए कितने चिंतित हैं, यह देखकर बहुत से लोगों के दिल हिल गये। अब तो उन बच्चों के तुरंत यान में सुरक्षित लौट आने की चिंता सभी को होने लगी थी।

बच्चों को सलाह दी गयी कि वे
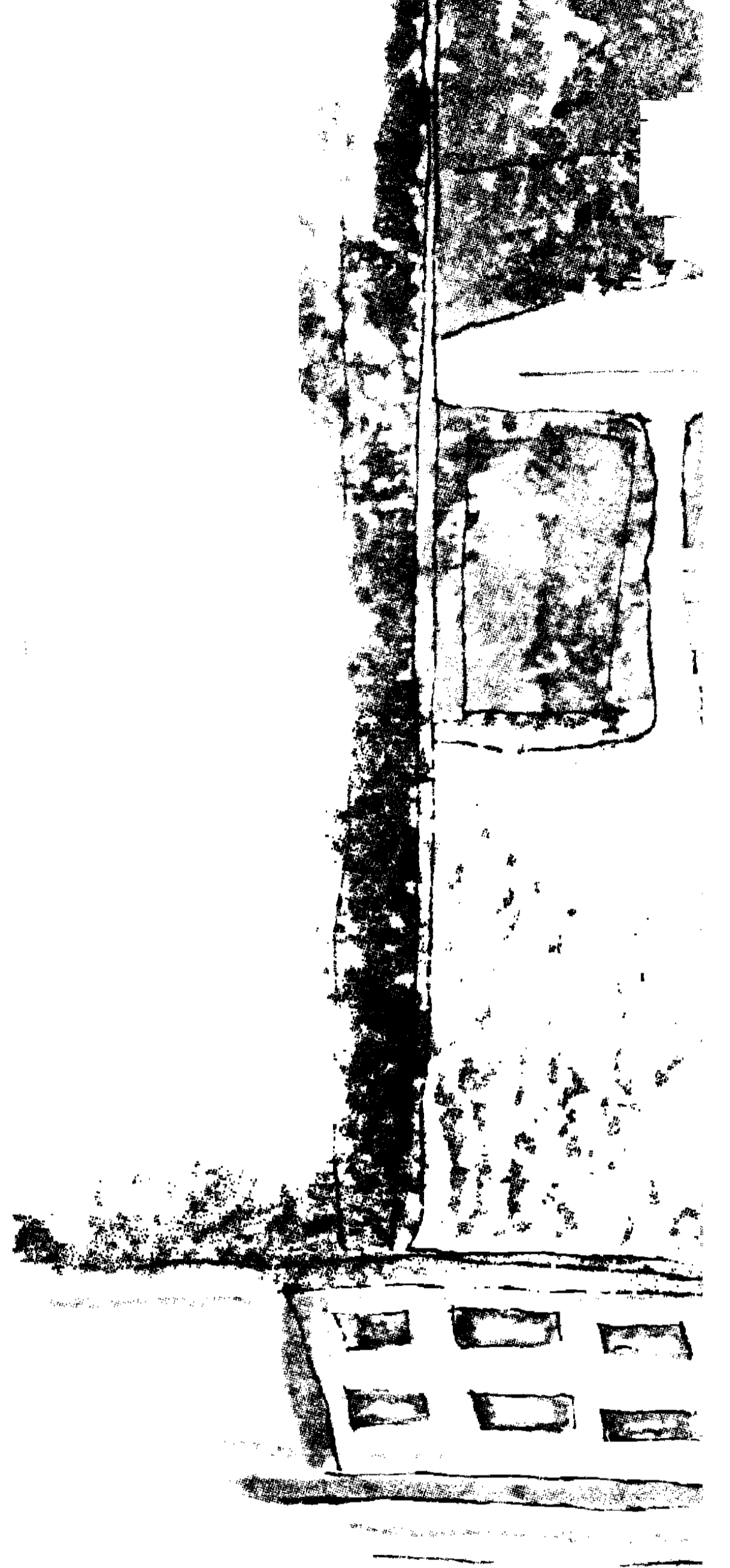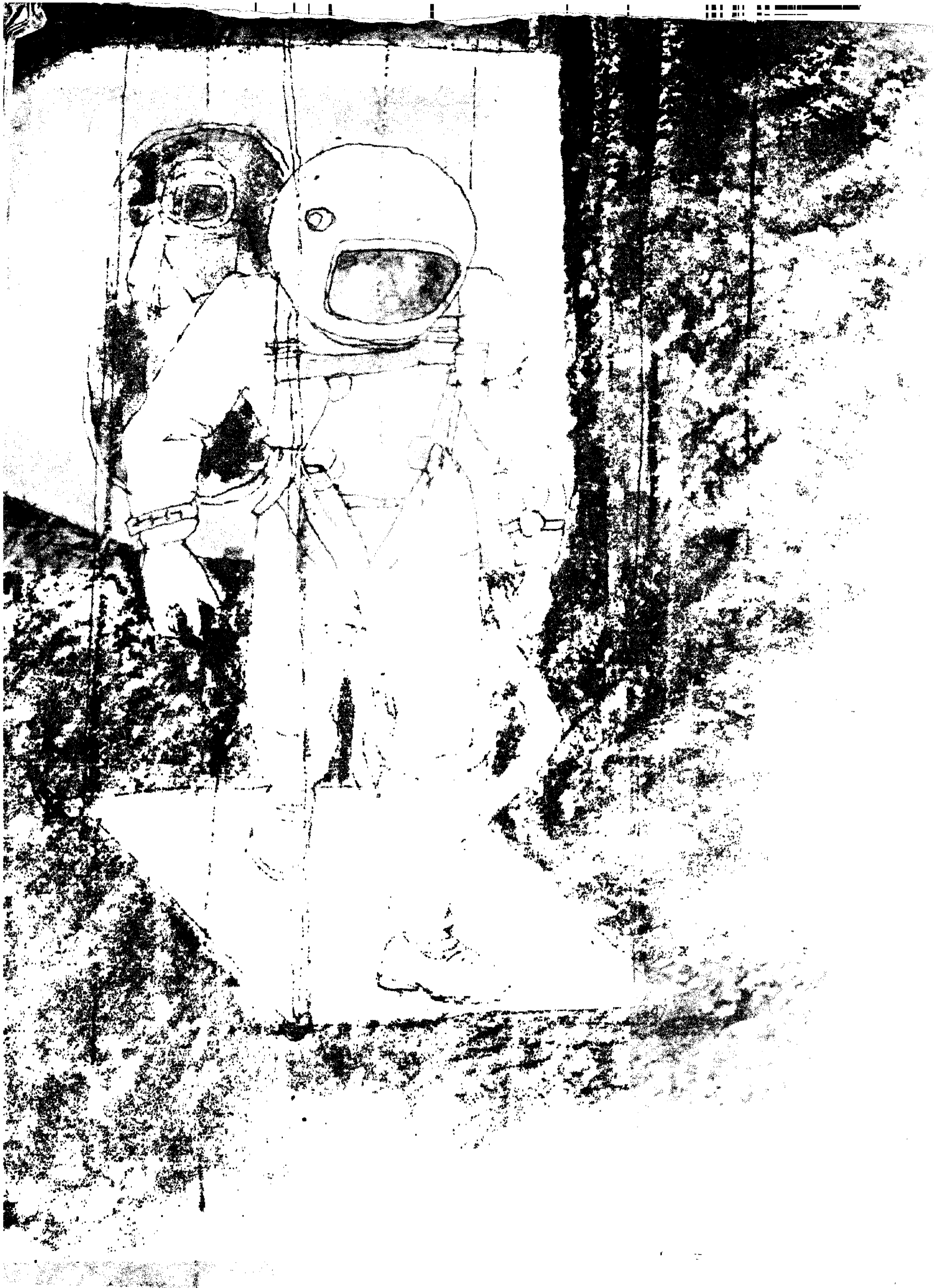
गणनाओं को छोड़कर अपने अंतरिक्ष कवच पहन लें और जल्दी करें। उल्कापिंड निकट आ रहे थे।

कप्तान उत्तम अब तक बड़े यान में पहुंच गये थे। जैसे ही रामू बाहर निकला, उन्होंने उसकी ओर रस्सियां बढ़ायीं और रेडियो के जरिये बताया कि उनका प्रयोग कैसे किया जाये। बाकी दोनों बच्चे लघु-उल्कापात की सूचना के लिए पट्टिकाएं लगाने में जुटे हुए थे।

अचानक आग की एक चमक कौंधी, जो क्षण भर ही दिखी। कप्तान उत्तम को एकदम पता लग गया कि कुछ भयानक घट गया है। एक लघु उल्कापिंड रामू के हृदय में घुस गयी थी।

कप्तान उत्तम तत्काल हरकत में आये। रस्सियों और सीढ़ी से रामू को पकड़कर धीरे से बड़े यान में ले आये। पर रामू तो अब मर चुका था। उसके शरीर पर तैल प्रदूषण की समस्या को हल करने वाले सूत्र, उसके हृदय के खून से तर, लिपटे हुए थे।

इस दुखद घटना को सुनकर सभी स्तंभित रह गये। जो काम आतंकवादी न कर सके, उसे ब्रह्मांड से आये एक छोटे से पत्थर ने क्षण भर में कर दिया। राष्ट्र संघ की आम सभा में एक मिनट का मौन रखा गया। उस युवा वीर को भावभीनी श्रद्धांजलियां अर्पित की गयीं।

अन्य बच्चों की सुरक्षित वापसी की मांग होने लगी। लक्ष्मण और तरंगिनी को बचाने के लिए एक तात्कालिक अभियान शुरू करने के लिए बड़ी ताकतों से अपील की गयी। अंतरिक्ष यान भेजने से पहले उन्हें रेडियो के जरिये एक योजना बताने का निर्णय लिया। पर उत्तर अप्रत्याशित था।

''हमने तय कर लिया है कि पृथ्वी पर वापस नहीं लौटेंगे,'' बच्चों ने संकेत भेजा था, ''हम अनंत काल तक अपने को अंतरिक्ष में जीवित रख सकते हैं। सामान्य मानव अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में केवल कुछ ही वर्ष रहे हैं। हमने निश्चय कर लिया है कि शन्य गुरुत्व को झेलने की मनुष्य की सीमा की खोज करेंगे।''

बच्चों के जवाब को सारे उपग्रह अनुश्रवण केंद्रों द्वारा प्रसारित किया
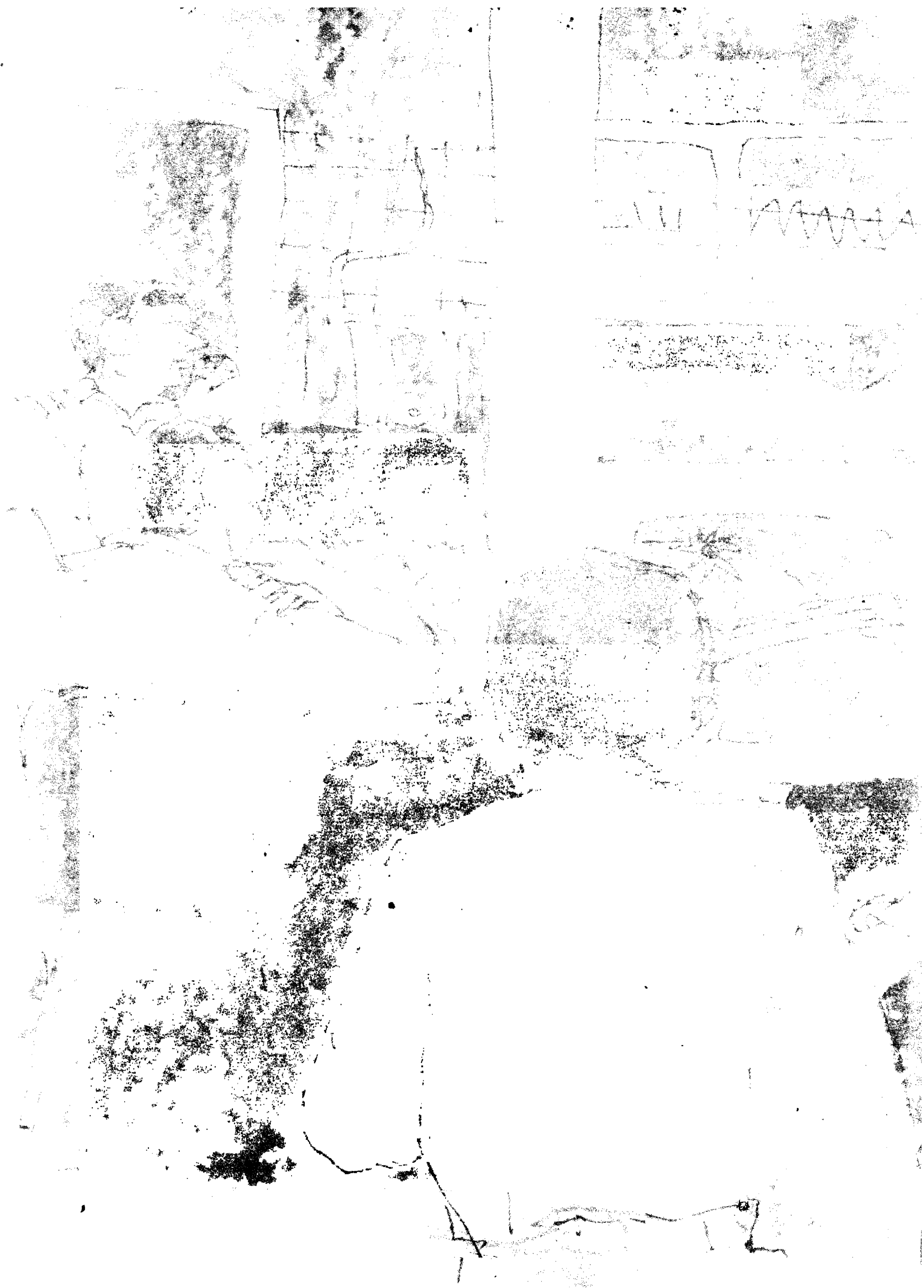
गया। शस्त्र निर्माताओं और आतंकवादियों ने राहत की सांस ली। कप्तान उत्तम और प्रोफेसर मारुती चिंतित थे। लक्ष्मण और तरंगिनी जिस यान पर थे, उसमें भोजन और ऑक्सीजन तो सीमित मात्रा में ही थी। क्या अपनी अति बुद्धिमत्ता से वे सभी आवश्यक जीवनदायी जरूरतों को कम कर सकते हैं? क्या उनकी अति-बुद्धिमत्ता ने उन्हें इतना सक्षम बना दिया है?

प्रोफेसर मारुती ने कप्तान उत्तम से पूछा, "क्या तुमने ध्यान नहीं दिया कि तरंगिनी और लक्ष्मण ने रामू के प्रति किसी भी भावना का प्रदर्शन नहीं किया। क्या वे उसे इतनी जल्दी भूल गये हैं?"

कप्तान उत्तम ने जवाब दिया, "मेरा विश्वास है कि उनके स्वभाव में ही कुछ ऐसा हो गया था कि उन्होंने अनावश्यक लगने वाली सभी भावनाओं को खत्म कर दिया था। यह सामान्य से कुछ अलग है, जो उनकी अति बुद्धिमत्ता के कारण उनमें आयी है।"

वैज्ञानिकों का अनुरोध था कि रामू के मस्तिष्क की जांच की जाये।
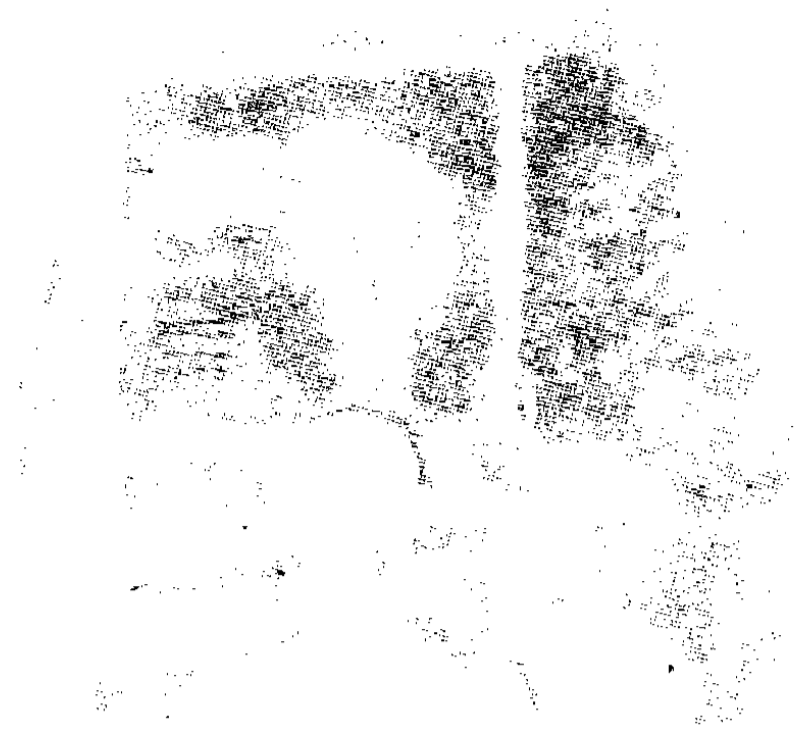
वैज्ञानिकों को ऐसा लगा

रामू मर चुका था। उसके चेहरे पर एक विलक्षण मुस्कान फैली हुई थी। डाक्टर धनवंतरी ने महसूस किया कि उसके मस्तिष्क की जांच की जानी चाहिए। हो सकता है वहां कुछ ऐसा हो, जिससे अति बुद्धिमत्ता के रहस्य का पता चल सके। उन्हें याद आया कि वे बच्चे मनुष्य ही तो थे पर किस तरह से साधारण मनुष्य के परे उनका विकास हुआ था।

एक मेडिकल दल ने बड़ी सावधानी से उसके मस्तिष्क को खोला ताकि इस विचित्र मस्तिष्क के हेमिस्फीयर्स तथा लॉब्स की जांच-परख की जा सके। क्या यह किसी तरह भिन्न था? मसलन, कुछ बड़ा था? नहीं, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता। असल में यह तो सामान्य से कुछ छोटा ही था। पर बुद्धिमत्ता तो पूरे मस्तिष्क का काम होता है। हां, आगे का भाग पूरी तरह विकसित था और थैलेमस व हाइपोथैलेमस भी अच्छी तरह विकसित थे। पूरी तंत्रिक प्रणाली काफी मजबूत प्रतीत हो रही थी। दरअसल यह एक सामान्य मस्तिष्क था, पर—

''पर?'' एक डाक्टर ने पूछा।

''रामू का मस्तिष्क इस ओर स्पष्ट संकेत करता है कि मानव-मस्तिष्क का विकास अभी रुका नहीं है,'' दल के प्रमुख ने कहा, ''हम कह सकते हैं कि किसी भी मस्तिष्क में हम अब अपनी इच्छित चीज रख सकते हैं। पर तर्क,

स्मरण शक्ति और आकांक्षाओं के माध्यम से ही यह काम किया जा सकता है। जैसे ही बुद्धि की प्रक्रिया शुरू हुई, ये तीनों बच्चे आकांक्षाओं की शक्ति और बुद्धिमान स्मृति के स्तंभ के सहारे औरों से आगे निकल गये।''

''और भावनाएं तो उनमें कभी विकसित ही नहीं हुई? तरंगिनी में भी नहीं?''

''नहीं, उनके लिए भावनाओं का महत्व खत्म हो गया था। संभवतः हमारे भीतर ये कुछ ज्यादा ही हैं।''

कप्तान उत्तम झेंप गया। वह बच्चों के इतना निकट रहा था, वह उनसे प्यार करने लगा था, पर क्या उन्होंने भी कभी उससे प्यार किया होगा? क्या वह कभी यह जान पायेगा?

''क्या इनके अलावा और भी होंगे?''

''अच्छा, तुम्हें याद होगा, कुछ सूत्रों के अनुसार काम किया गया था, उनके परिणामों का चूहों पर परीक्षण करने के बाद इन बच्चों पर परीक्षण किया गया था। पर यह प्रक्रिया दोहराने में हम कभी कामयाब नहीं हो पाये। कारण हमें मालूम नहीं है। संभवतः, किसी रूप में, हम इसके योग्य नहीं थे।''

इस दौरान तरंगिनी और लक्ष्मण के उपग्रह पर क्या बीत रही थी? नैनीताल की उपग्रह वेधशाला ने चिंता के साथ सूचना दी कि दोनों बच्चे अब पृथ्वी की कक्षा से बाहर निकल गये हैं। और यह उनके चारों ओर निगरानी कर रहे उपग्रहों के बावजूद हो गया।

पर एक संदेश मिल गया था। तरंगिनी ने कहा था कि वह और लक्ष्मण पृथ्वी के प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ने वाली किसी भी समस्या को हल करने में अब भी भरसक कोशिश करेंगे। उन्होंने खुशी जाहिर की कि तैल प्रदूषण की समस्या हल की जा रही है हालांकि कई देशों के पास अब भी आण्विक प्रक्षेपणास्त्र बचे हुए हैं। अब उनसे निपटना धरती के लोगों के

जिम्मे है। पता नहीं वे आतंकवादियों से इतना घबराते क्यों हैं? वे केवल कुछ ही लोगों की हत्या करते हैं, यह तो कुछ भी नहीं है।

जब यह समाचार मिला तो डाक्टर धनवंतरी ने कप्तान उत्तम से कहा, ''तो यह बात है। उनकी सामान्य भावनाएं बिलकुल खत्म हो गयी हैं। पर अगर उनमें डर होता तो संभवतः वे कभी आतंकवादियों के चंगुल से मुक्त न हो पाते।''

संदेश में आगे था: ''इसलिए यह हम आप लोगों पर छोड़ते हैं। लाखों लोगों को मार डालना कितने खेद की बात है। इससे संतुलन बिगड़ जायेगा। इस पर ध्यान दीजिए। हम ब्रह्मांड की अन्य सभ्यताओं से मिलने के लिए जा रहे हैं। हो सकता है, उनमें पृथ्वी के लोगों से अधिक समझ हो, वे प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर रहते हों।''

''मेरी यही कामना है। मेरी यही कामना है!'' कप्तान उत्तम ने कहा।

दस वर्ष बीत गए। धरती के लोग अब भी अपनी समस्याओं से जूझ रहे थे। सद्भाव और समझदारी से हर समस्या हल हो सकती थी। बच्चों की कोई खबर नहीं थी। पर ठीक बारहवें वर्ष के अंत में सूक्ष्म तरंगों में असाधारण वृद्धि हो गयी। आरवी के नये और बड़ी तश्तरी के आकार के संदेश ग्रहण करने वाले यंत्र ने इस संकेत को विस्तार से अंकित किया। यह तो प्रमाणित ही था कि इन सूक्ष्म तरंगों का स्रोत बर्नार्ड के